खण्ड-147, अंक-6
सोमवार, 6 पौष, शक संवत् 1876
(27 दिसम्बर, 1954 ई0)

उत्तर प्रदेश विधान सभा

की

कार्यवाही

(अधिकृत विवरण)

खण्ड 147 में 0 अंक है

उत्तर प्रदेश विधान सभा सचिवालय (कार्यवाही अनुभाग) द्वारा प्रकाशित

मुद्रक:

निदेशक, राजकीय मुद्रण एवं लेखन सामग्री, लखनऊ , उत्तर प्रदेश (भारत)

१९५४

मूल्य : बिना महसूल 25 पैसे, महसूल सहित 31 पैसे |

वार्षिक चन्दा : बिना महसूल 10 रुपये, महसूल सहित 12 रुपये |

उत्तर प्रदेश विधान सभा

सोमवार, २७ दिसम्बर, १९५४

विधान सभा की बैठक सभा-मंडप, लखनऊ में ११ बजे दिन में अध्यक्ष श्री आत्माराम गोविन्द खेर की अध्यक्षता में आरम्भ हुई ।

उपस्थित सदस्यों की सूची (३८५)

अक्षयवर सिंह, श्री
अजीज इमाम, श्री
अनन्तस्वरूप सिंह, श्री
अब्दुल मुईज खां, श्री
अमरेशचन्द्र पांडेय, श्री
अमृतनाथ मिश्र, श्री
अली जहीर, श्री सैयद
अवधशरण वर्मा, श्री
अवधेशचन्द्र सिंह, श्री
अशरफ अली खां, श्री
आर्थर ग्राइस, श्री
आशालता व्यास, श्रीमती
इरतजा हुसैन, श्री
इसरारुल हक़, श्री
इस्तफा हुसैन, श्री
उदयभान सिंह, श्री
उमाशंकर, श्री
उमाशंकर तिवारी, श्री
उमाशंकर मिश्र, श्री
उम्मेद सिंह, श्री
उल्फतसिंह चौहान निर्भय, श्री
ओंकारसिंह, श्री
कन्हैयालाल वाल्मीकि, श्री
कमलापति त्रिपाठी, श्री
कमलासिंह, श्री
कमाल अहमद रिजवी, श्री
करनसिंह यादव, श्री
करनसिंह, श्री
कल्याणचन्द मोहिले उपनाम छुन्नन गुरु, श्री
कल्याणराय, श्री
कामताप्रसाद विद्यार्थी, श्री
कालीचरण टंडन, श्री
काशीप्रसाद पांडेय, श्री
किन्दरलाल, श्री
किशनस्वरूप भटनागर, श्री
कुंवरकृष्ण वर्मा, श्री
कृपाशंकर, श्री
कृष्णचन्द्र गुप्त, श्री
कृष्णचन्द्र शर्मा, श्री
कृष्णशरण आर्य, श्री
केवलसिंह, श्री
केशभान राय, श्री
केशवगुप्त, श्री
केशव पांडेय, श्री
केशवराम, श्री
कैलाश प्रकाश, श्री
खयालीराम, श्री
खुशीराम, श्री
खूबसिंह, श्री
गंगाधर जाटव, श्री,
गंगाधर मैठाणी, श्री
गंगाधर शर्मा , श्री
गंगाप्रसाद, श्री
गंगाप्रसाद सिंह, श्री
गजेन्द्र सिंह, श्री
गज्जूराम, श्री
गणेशचन्द्र काछी, श्री
गणेशप्रसाद जायसवाल, श्री
गणेशप्रसाद पांडेय, श्री
गिरजारमण शुक्ल, श्री
गिरधारीलाल, श्री
गुप्तार सिंह, श्री
गुरुप्रसाद पांडेय, श्री
गुरुप्रसाद सिंह, श्री
गुलजार, श्री
गेंदासिंह, श्री

गोवर्धन तिवारी, श्री
गोविन्दवल्लभ पन्त, श्री
गौरीराम, श्री
घनश्यामदास, श्री
घासीराम जाटव, श्री
चतुर्भुज शर्मा, श्री
चन्द्रभानु गुप्त, श्री
चन्द्रभानु शरण सिंह, श्री
चन्द्रवती, श्रीमती
चन्द्रहास, श्री
चरणसिंह, श्री
चित्तरसिंह निरञ्जन, श्री
चिरंजीलाल जाटव, श्री
चिरंजीलाल पालीवाल, श्री
चुन्नीलाल सगर, श्री
छेदालाल, श्री
छेदालाल चौधरी, श्री
जगतनारायण, श्री
जगदीश प्रसाद, श्री
जगदीशसरन रस्तोगी, श्री
जगनप्रसाद रावत, श्री
जगन्नाथ प्रसाद, श्री
जगन्नाथ बख्श दास, श्री
जगन्नाथ मल्ल, श्री
जगन्नाथ सिंह, श्री
जगपति सिंह, श्री
जगमोहन सिंह नेगी, श्री
जटाशंकर शुक्ल, श्री
जयपाल सिंह, श्री
जवाहरलाल, श्री
जवाहर लाल रोहतगी, डाक्टर
जुगलकिशोर, श्री
जोरावर वर्मा, श्री
ज्वालाप्रसाद सिन्हा, श्री
झारखंडे राय, श्री
टीकाराम, श्री
डल्लाराम, श्री
डालचन्द, श्री
तिरमल सिंह, श्री
तुलाराम, श्री
तुलाराम रावत, श्री
तेजप्रताप सिंह, श्री
तेजबहादुर, श्री
तेजासिंह, श्री
त्रिलोकी नाथ कौल, श्री
दयालदास भगत, श्री
दर्शनराम, श्री
दलबहादुर सिंह, श्री
दाऊदयाल खन्ना, श्री
दाताराम, श्री
दीनदयालु शर्मा, श्री
दीनदयालु शास्त्री, श्री
दीपनारायण वर्मा, श्री
देवकी नन्दन विभव, श्री
देवदत्त मिश्र, श्री
देवदत्त शर्मा, श्री
देवनन्दन शुक्ल, श्री
देवमूर्ति राम, श्री
देवराम, श्री
देवेन्द्र प्रताप नारायण सिंह, श्री
द्वारका प्रसाद मित्तल, श्री
द्वारका प्रसाद मौर्य्य, श्री
द्वारिका प्रसाद पांडेय, श्री
धनुषधारी पांडेय, श्री
धर्मसिंह, श्री
धर्मदत्त वैद्य, श्री
नन्दकुमारदेव वाशिष्ठ, श्री
नरदेव शास्त्री श्री
नरेन्द्रसिंह, विष्ट, श्री
नरोत्तम सिंह, श्री
नवल किशोर, श्री
नागेश्वर द्विवेदी, श्री
नाजिम अली, श्री
नारायणदत्त तिवारी, श्री
नारायण दास, श्री
नारायणदीन वाल्मीकि, श्री
निरंजन सिंह, श्री
नेकराम शर्मा, श्री
नेत्रपाल सिंह, श्री
नौरंगलाल, श्री
पद्मनाथ सिंह, श्री
परमानन्द सिन्हा, श्री
परमेश्वरी दयाल, श्री
परिपूर्णानन्द वर्मा, श्री
पहलवान सिंह चौधरी, श्री
पातीराम, श्री
पुत्तूलाल, श्री
पुद्दनराम, श्री
पुलिन बिहारी बनर्जी, श्री
प्रकाशवती सूद, श्रीमती
प्रतिपालसिंह, श्री
प्रभाकर शुक्ल, श्री

प्रभुदयाल, श्री
प्रेमकिशन खन्ना, श्री
फजलुल हक, श्री
फतेहसिंह राणा, श्री
फूलसिंह, श्री
बद्रीनारायण मिश्र, श्री
बनारसीदास, श्री
बलदेव सिंह, श्री
बलदेव सिंह आर्य, श्री
बलवीर सिंह, श्री
बलभद्र प्रसाद शुक्ल, श्री
बलवन्तसिंह, श्री
बशीर अहमद हकीम, श्री
बसन्तलाल, श्री
बसन्तलाल शर्मा, श्री
बाबूनन्दन, श्री
बाबूराम गुप्त, श्री
बाबूलाल कुसुमेश, श्री
बाबूलाल मीतल, श्री
बालेन्दुशाह, महाराजकुमार
बिशम्बर सिंह, श्री
बेचनराम, श्री
बेचनराम गुप्त, श्री
बेनीसिंह, श्री
बैजनाथ प्रसाद सिंह, श्री
ब्रह्मदत्त दीक्षित, श्री
भगवतीदीन तिवारी, श्री
भगवतीप्रसाद दुबे, श्री
भगवतीप्रसाद शुक्ल, श्री (बाराबंकी)
भगवानदीन वाल्मीकि, श्री
भीमसेन, श्री
भुवरजी, श्री
भृगुनाथ चतुर्वेदी, श्री
भोलासिंह यादव, श्री
मक़सूद आलम ख़ां, श्री
मंगला प्रसाद, श्री
मथुराप्रसाद त्रिपाठी, श्री
मथुराप्रसाद पांडेय, श्री
मदनगोपाल वैद्य, श्री
मदनमोहन उपाध्याय, श्री
मन्नीलाल गुरुदेव, श्री
मलखान सिंह, श्री
महमूद अली श्रां, श्री (रामपुर)
महमूद अली ख़ां, श्री (सहारनपुर)
महाराजसिंह, श्री
महावीरप्रसाद शुक्ल, श्री
महावीर प्रसाद श्रीवास्तव, श्री
महावीर सिंह, श्री
महीलाल, श्री
मान्धाता सिंह, श्री
मिजाजीलाल, श्री
मिहरवान सिंह, श्री
मुन्नूलाल, श्री
मुरलीधर कुरील, श्री
मुश्ताक अली ख़ां, श्री
मुहम्मद अब्दुल लतीफ, श्री
मुहम्मद अब्दुस्समद, श्री
मुहम्मद इब्राहीम, श्री हाफिज
मुहम्मद तकी हादी, श्री
मुहम्मद नसीर, श्री
मुहम्मद मंजूरुल नबी, श्री
मुहम्मद शाहिद फाखरी, श्री
मोहनलाल, श्री
मोहनलाल गौतम, श्री
मोहन सिंह, श्री
मोहन सिंह शाक्य, श्री
यमुना सिंह, श्री
यशोदादेवी, श्रीमती
रघुनाथ प्रसाद, श्री
रघुराज सिंह, श्री
रघुवीर सिंह, श्री
रणञ्जय सिंह, श्री
रतनलाल जैन, श्री
रमेशचन्द्र शर्मा, श्री
रमेश वर्मा, श्री
राजकिशोर राव, श्री
राजकुमार शर्मा, श्री
राजनारायण, श्री
राजनारायण सिंह, श्री
राजवंशी, श्री
राजाराम, श्री
राजाराम किसान, श्री
राजाराम मिश्र, श्री
राजाराम शर्मा, श्री
राजेन्द्रदत्त, श्री
राजेश्वरसिंह, श्री
राधाकृष्ण अग्रवाल, श्री
राधामोहन सिंह, श्री
रामअधार तिवारी, श्री
रामअधीन सिंह यादव, श्री
रामअनन्त पांडेय, श्री
रामअवधसिंह, श्री

रामकिंकर, श्री
रामकुमार शास्त्री, श्री
रामकृष्ण जैसवार, श्री
रामचन्द्र विकल, श्री
रामचरणलाल गंगवार, श्री
रामजीलाल सहायक, श्री
रामजीसहाय, श्री
रामदास आर्य, श्री
रामदुलारे मिश्र, श्री
रामनरेश शुक्ल, श्री
रामनारायण त्रिपाठी, श्री
रामप्रसाद, श्री
रामप्रसाद देशमुख, श्री
रामप्रसाद नौटियाल, श्री
रामबली मिश्र, श्री
रामभजन, श्री
राममूर्ति, श्री
रामरतन प्रसाद, श्री
रामराज शुक्ल, श्री
रामलखन, श्री
रामलखन मिश्र, श्री
रामलाल, श्री
रामवचन यादव, श्री
रामशंकर द्विवेदी, श्री
रामशंकर रविवासी, श्री
रामसनेही भारतीय, श्री
रामसहाय शर्मा, श्री
रामसुन्दर पांडेय, श्री
रामसुन्दर राम, श्री
रामसुभग वर्मा, श्री
रामसुमेर, श्री
रामस्वरूप, श्री
रामस्वरूप गुप्त, श्री
रामस्वरूप भारतीय, श्री
रामस्वरूप मिश्र विशारद, श्री
रामहरख यादव, श्री
रामहेत सिंह, श्री
रामेश्वर प्रसाद, श्री
रामेश्वर लाल, श्री
लक्ष्मणदत्त भट्ट, श्री
लक्ष्मणराव कदम, श्री
लक्ष्मीदेवी, श्रीमती
लक्ष्मीशंकर यादव, श्री
लताफत हुसैन, श्री
लालबहादुर सिंह, श्री
लालबहादुर सिंह कश्यप, श्री
लीलाधर अष्ठाना, श्री
लुत्फअली खां, श्री
लेखराजसिंह, श्री
वंशनारायणसिंह, श्री
वंशीदास धनगर, श्री
वंशीधर मिश्र, श्री
वशिष्ठनारायण शर्मा, श्री
वसी नक़वी, श्री
वासुदेव प्रसाद मिश्र, श्री
विचित्रनारायण शर्मा, श्री
विजयशंकर प्रसाद, श्री
विद्यावती राठौर, श्रीमती
विश्वनाथसिंह गौतम, श्री
विष्णुदयाल वर्मा, श्री
विष्णुशरण दुब्लिश, श्री
वीरसेन, श्री
वीरेन्द्रनाथ मिश्र, श्री
वीरेन्द्रपति यादव, श्री
ब्रजभूषण मिश्र, श्री
ब्रजरानी मिश्र, श्रीमती
व्रजवासीलाल, श्री
व्रजविहारी मिश्र, श्री
व्रजविहारी मेहरोत्रा, श्री
शंकरलाल, श्री
शम्भूनाथ चतुर्वेदी, श्री
शांतिप्रपन्न शर्मा, श्री
शिवकुमार मिश्र, श्री
शिवकुमार शर्मा, श्री
शिवदानसिंह, श्री
शिवनारायण, श्री
शिवपूजन राय, श्री
शिवप्रसाद, श्री
शिवमंगलसिंह, श्री
शिवमंगलसिंह कपूर, श्री
शिवराजबली सिंह, श्री
शिवराजसिंह यादव, श्री
शिवराम पांडेय, श्री
शिवरामराय, श्री
शिववक्षसिंह राठौर, श्री
शिववचनराव, श्री
शिवशरणलाल श्रीवास्तव, श्री
शिवस्वरूप सिंह, श्री
शुकदेव प्रसाद, श्री
शुगनचन्द, श्री
श्याममनोहर मिश्र, श्री
श्यामलाल, श्री

श्यामाचरण वाजपेयी शास्त्री, श्री
श्रीचन्द, श्री
श्रीनाथ भार्गव, श्री
श्रीनाथराम, श्री
श्रीनिवास पंडित, श्री
सईदजहां मखफी शेरवानी, श्रीमती
संग्राम सिंह, श्री
सच्चिदानन्द त्रिपाठी, श्री
सज्जनदेवी महनोत, श्रीमती
सत्यनारायणदत्त, श्री
सत्यसिंह राणा, श्री
सम्पूर्णानन्द, डाक्टर
सहदेव सिंह, श्री
सावित्रीदेवी, श्रीमती
सियाराम गंगवार, श्री
सियाराम चौधरी, श्री
सीताराम , डाक्टर
सीताराम शुक्ल, श्री
सुन्दरदास, श्री दीवान
सुन्दरलाल, श्री
सुरजूराम, श्री
सुरेन्द्रदत्त वाजपेयी, श्री
सुरेश प्रकाश सिंह, श्री
सुल्तान आलम खां, श्री
सूर्य्यप्रसाद अवस्थी, श्री
सूर्य्यबली पांडेय, श्री
सेवाराम, श्री
हबीबुर्रहमान अन्सारी, श्री
हबीबुर्रहमान आज़मी, श्री
हबीबुर्रहमान ख़ां हकीम, श्री
हमीद ख़ां, श्री
हरखयाल सिंह, श्री
हरगोविन्द पन्त, श्री
हरगोविन्दसिंह, श्री
हरदयाल सिंह पिपल, श्री
हरदेवसिंह, श्री
हरसहाय गुप्त, श्री
हरिप्रसाद, श्री
हरिश्चन्द्र अष्ठाना, श्री
हरिश्चन्द्र वाजपेयी, श्री
हरिसिंह, श्री
हुकुम सिंह, श्री
होतीलालदास, श्री

प्रश्नों को अगले दिन के लिये स्थगित करने की प्रार्थना

श्री रामनरेश शुक्ल (जिला प्रतापगढ़)---माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं सुझाव देता हूं कि आज के प्रश्न मुल्तवी कर दिये जायं और कल ले लिये जायं।

श्री अध्यक्ष---इसमें किसी को कोई आपत्ति तो नहीं है ?

श्री रामनारायण त्रिपाठी (जिला फैजाबाद)---कोई आपत्ति नहीं है।

भारतीय मंत्रिमंडल में जाने के लिये मुख्य मंत्री श्री गोविन्दवल्लभ पंत को विदाई

*वित्त मंत्री (श्री हाफिज मुहम्मद इब्राहीम)---जनाब स्पीकर साहब, इस मौके पर जब कि हम इस वक्त पन्त जी की बिदाई के मुताल्लिक अपने खयालात और विचारों को जाहिर करने के लिये बैठे हुए हैं, यह सोचता हूं कि पन्त जी के सम्बन्ध में किस बात को कहूं और कहां से शुरू करूं ? इस सदन में यहां खड़ा हूं और देखता हूं कि इस सदन का यह सहन, इसका यह गुंबज, इसकी यह दीवारें, ये तारीखें हैं जो पन्त जी ने तकरीरें कीं उनकी और उनकी पार्लियामेंटरी जिन्दगी की तारीख को अपने अन्दर समाये हुए हैं। अगर उनमें यहां किसी को जीती जागती तस्वीर उनके मुताल्लिक देखनी हो तो वह जनाब-वाला, आपकी उस लाइब्रेरी में जिसमें शुरू से लेकर आज तक की तकरीर लिखी हुई हैं, देख सकते हैं और इस बात को जान सकते हैं कि पंडित गोविन्द वल्लभ पन्त ने इस सदन में उस जगह बैठकर, यह मेरे सामने जो जगह है, वहां बैठ कर जो

---

*वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

[श्री हाफिज मुहम्मद इबाहीम]

खिदमत इस देश की की है, वह हमेशा इस देश की तारीख में सुनहरे हरफों में लिखने के काबिल है और लिखी गयी है। पन्त जी ने कुरबानियां कीं, तकलीफात उठायीं इस देश को आजाद कराने के लिये, वहां उन्होंने अपनी काबलियत से हमको, जो एक सिपाही के तौर पर काम करने वाले थे, और इस देश के सभी रहने वालों को रास्ता भी दिखलाया है, लीडरी भी की है। और उस हुकूमत से उन तरीकों से भी लड़े हैं जिन तरीकों को दुनिया में एक पार्लियामेंटरी तरीका कहा जाता है। यह तवारीख हर उस मेम्बर को कम से कम ऐवेलेबिल है जो इस सदन के मेम्बर हैं या आयन्दा होने वाले हैं और सिर्फ इतनी ही तवारीख नहीं है, उतना ही नहीं, पन्त जी जहां जा रहे हैं वहां का सदन भी इनको जानता है, उसकी भी दरो दीवार उस तवारीख को अपने अन्दर समाये हुए हैं। पन्त जी ने वहां के मेम्बर होने की हैसियत से जो कुछ रास्ता वहां दिखलाया है वह उसके अन्दर महफूज है और पन्त जी के लिये, मेरे नजदीक, वह कोई नयी जगह नहीं है। तकलीफ और दुःख उठाते रहते हुए भी जब सन् ३७ में कांग्रेस के हाथ में बागडोर आयी और पन्त जी ने हुकूमत को संभाला तो उन्होंने जिस तरीके से इस देश के उन तमाम मुश्किलात के मातहत काम किया उनकी वह वजा काबिले तारीफ है। उसके बाद सन् ४६ से अब तक जो कुछ काम हुआ उससे आपका और मेरा सम्बन्ध है, मेरा और आपका ही सम्बन्ध नहीं है बल्कि इस तमाम उत्तर प्रदेश का सम्बन्ध है और हिन्दुस्तान तथा दुनिया का सम्बन्ध है जिसकी गवाही देने वाले सिर्फ उत्तर प्रदेश के रहने वाले ही नहीं हैं, सारे हिन्दुस्तान के रहने वाले ही नहीं हैं बल्कि बाहर के देशों के भी हैं कि इस उत्तर प्रदेश ने सन् ४६ से अब तक जो काम किया है वह हिन्दुस्तान की तवारीख में सबसे पहला काम है जो कि हो सका है। वह कैसे हुआ? किसने किया? किया इंजीनियर्स ने किया, सरकारी मुलाजिमों ने किया, कांग्रेसी भाइयों ने किया, इस लेजिस्लेचर के मेम्बरों ने और किया उन मिनिस्टरों ने जिन मिनिस्टरों के सुपुर्द वह काम कहा जाता है लेकिन वह रूह कहां से आयी, वह हिम्मत कहां से आयी? इतनी हिम्मतवाला इन्सान खुदा ने इस देश को दिया और मैं पहले तो दुआ करता हूं कि ऐसी हिम्मत वाला इंसान कुदरत इस देश को, और हमारे उत्तर प्रदेश को अता करती रहे। लेकिन वह हौसला, वह हिम्मत जिसे कोई चीज हराती नहीं, कोई मुश्किल उसको पीछे हटाती नहीं, आगे बढ़ने के सिवा, आगे कदम रखने के सिवा दूसरा काम नहीं है। उस मजाज के साथ मैं समझता हूं कि आज तक पन्त जी के सामने से कोई शख्स नाराज होकर नहीं गया होगा। मुहब्बत का पुतला, प्रेमी, मैं नहीं जानता सत्य प्रेमी तथा और कितने प्रेमी जैसे कहे जाते हैं उसी तरह से बल्लभ प्रेमी भी कहा जा सकता है और नाम के आगे लिखा जा सकता है। अगर मैं शायर होता तो बतला सकता कि नाम के आगे तखल्लुस के तौर पर भी लिखा जा सकता है। वह आम मुहब्बत औलाद से या घर से नहीं, दोस्तों से नहीं, इस देश के तमाम रहने वाले लोगों से, इस देश के तमाम रहने वालों से ही नहीं बल्कि दुनिया के हर इंसान से है। वह तालीम जो महात्मा गांधी ने ही इस मामले में जिनका मजहब यह था, जिनका कौल यह था, जिनका उसूल यह था कि इंसान से मुहब्बत करो, और इंसान से नफरत करना गुनाह है। उन्होंने उसी पर अमल किया, उसको पूरे तौर से इनवाइव किया, उन्होंने खुद उसी रास्ते पर इस स्टेट को इस राज्य को लाकर उसकी तारीख लिखी और वह तारीख कभी मिटने वाली नहीं है, वह आज आपके सामने है और हमेशा के लिये आपकी औलादों के सामने रहने वाली है, अमिट है। जाओ, इस प्रदेश में जो बेशुमार नहरें निकली हैं, उनके चलते पानी से जाकर पूछो कि उसमें किसकी तबियत की रवानी है, वह रवानी उनमें कहां से आई, वह सिर्फ पन्त की तबियत की रवानी है; उन पावर हाउसेज को जाकर देखो, जो बिजली वहां बन कर चमक रही है, उस बिजली में चमक कहां की है? मैं कहता हूं और मेरा दावा है कि वह चमक, वह बिजली की चमक सिर्फ पन्त की तबियत की है पन्त के दिमाग की है। वह प्रदेश की लहलहाती खेतियां, वह काश्तकारों की जिन्दगी जिसने नई तरक्की पाई है वह कहां से आ गई?

यों तो तरक्की सभी तरीकों से होती है लेकिन इस दुनिया में जिसके जरिये से जो काम होते हैं उसके साथ ही उसकी ममदूह करते हैं और इस स्टेट में इस दिशा में जो कुछ हुआ वह पन्त की ही बदौलत हुआ, पन्त के दिमाग ने इन तरक्की के रास्तों को निकाला और सोचा। कौन सी वह चीज है इन्सान की जरूरत की, और कौन सा वह काम है कि जिससे इस प्रदेश के रहने वालों का स्तर ऊंचा होने वाला है और वह इस सूबे में न हो रहे हों? मैं जोरदार अलफाज में चैलेञ्ज करता हूं अगर किसी को इसमें शुभा हो, मैं यहां के मेम्बरों को ही नहीं कहता, मैं सिर्फ हाउस के मेम्बरों के मुताल्लिक अर्ज नहीं करता, किसी को भी इसके मुताल्लिक शुभा हो तो वह कह सकता है लेकिन वह किसी को है नहीं, और इससे कोई इन्कार कर ही नहीं सकता है। वह जंगल, वह फारेस्ट, उनकी तरक्की उन सबसे हम वाकिफ हैं। उनके जमाने में जो एफारेस्टेशन इस सूबे में हुआ है उसकी तारीख उन लहलहाते दरख्तों के पत्तों-पत्तों से जाकर कोई पूछे, उनके मजबूती पकड़ते तनों से कोई जाकर पूछे तो वह गवाही देंगे कि उनको पन्त ने ही जन्म दिया है और हम उसी के ममनूं हैं, उसी ने हमारी जिन्दगी को यहां लाकर रखा है। यह इमारतें हैं, यह सड़कें हैं, हर तरफ तरक्की के नज्जारे हैं।

जानवरों की और मवेशियों की आज इस सूबे में क्या हालत है, आज से ७ साल कब्ल क्या हालत थी और आज क्या है? आज काश्तकार को वह अच्छे मवेशी मोहैया हैं कि जिनके बल पर वह अपनी खेती को तरक्की दे सकता है, उसके पास जराअत के वह तमाम सामान मौजूद हैं जो उसकी तरक्की के लिये, सूबे की तरक्की के लिये और जराअत के लिये जरूरी हैं। कौन सा वह सीग़ा है जिधर तरक्की नहीं हुई? क्या स्कूल हैं पढ़ाने के लिये, शफाखाने हैं इलाज के लिये, कहां तक मैं गिनाऊं? हब सब जानते हैं, इन चीजों को देखते हैं। यह किसका तुफ़ैल है? यह सब किसने कर दिया? यह हमारी जनता का पैसा था और उस पर इन्तजाम था इन्हीं पन्त जी का और वह इन्तजाम जैसा हमारे चीफ मिनिस्टर ने किया है उसकी मिसाल देश के अन्दर नहीं है। (तालियां---तालियां) फाइनेंस को ही लीजिये, मैं तो बेपढ़ा लिखा आदमी, सुनता था, अन्दाजा तो नहीं करता था, जब पन्त जी सेंट्रल असेम्बली के मेम्बर थे तो फाइनेंस के मुताल्लिक उनकी बड़ी शोहरत थी, खुदा ने मुझे मौका दिया और मैंने उसको देखा, जहां इस स्टेट ने इन तमाम चीजों में तरक्की की है और आगे बढ़ी है वहां उन्हीं की बदौलत, आज यह कहा जा सकता है कि इस फाइनेंन्स के जानने वाले की बदौलत, इस स्टेट की फाइनेन्शियल स्थिति वह है जो इस देश में किसी की नहीं है। उसका इन्तजाम ऐसा है।

यह जमींदारों के जमींदारियों की मंसूखी यह क्या है? कितना बड़ा इन्कलाब हुआ, यहां की सोसाइटी के अन्दर कि दुनिया की तारीख के अन्दर ऐसी मिसाल मिलेगी नहीं। ऐसे-ऐसे इन्कलाब जिस जमाने में हुये हैं पिछली तारीख को पढ़ लो, देख लो, कि वह क्या हुआ है। जिस खामोशी, जिस शान और इतमीनान के साथ वह इन्कलाब हुआ और इसलिये हुआ कि यहां की ७०, ७५ फीसदी आबादी है वह भी हिन्दुस्तान की जिन्दगी का मजा उठा सके, उसको भी आजादी हासिल हो। वह इन्कलाब कैसे हो गया? आखिर यह किसकी हिम्मत से हुआ। हमने कार्य किया, हम अपने पैरों पर चले तो किसकी हिम्मत से चले? हम अपने पैरों से चलते हैं तो चलते हैं पन्त की हिम्मत से। तो क्या एक ऐसी जात जिससे हमको इस तरीके से हिदायत मिलती हो, जिसने इस तरीके से हमसे घुलमिलकर हमसे काम कराये हों, अपनी हिदायत के अन्दर जिसने प्रेम के सिवा कभी गुस्से की निगाह से न देखा हो, जो हर यहां के रहने वाले को अपना भाई समझता हो, जिसके दिल को तकलीफ पहुंचती हो यह सुनकर कि इस देश के किसी रहने वाले को फलां तरह की तकलीफ है, जिसका दिल तिलमिलाता है कि जिस कदर जल्द से जल्द मुमकिन हो इस तकलीफ को खो दो, तो मैं, हुजूर, यह अर्ज करूं कि क्या उसका नतीजा यह नहीं कि पन्त दिल्ली को जा रहे हैं तो आज उत्तर प्रदेश क्या कह रहा है, क्या यहां हो रहा है, मैं और आप क्या कह रहे हैं, कुछ मैं और आप नहीं, कांग्रेस पार्टी ही नहीं जिसे समझते हों कांग्रेस का दुश्मन आप उसके दिल से पूछिये, यहां से पन्त के जाने के मुताल्लिक, किसको नहीं मालूम? मुखालिफत वाले, हर खयाल के आदमी जो इस स्टेट के अन्दर रहते हैं इस बात से मुत्तफिक हैं और उसका दिल यह

[श्री हाफिज मुहम्मद इब्राहीम]

महसूस कर रहा है कि पन्त तो हमारे लिये न्यामत था और वह हमसे छीना जा रहा है और हमको उसका दुःख हो रहा है, यह अहसास है। मैं देखता हूं कि शहर में क्या हो रहा है, किस तरह से लोग आते हैं और दिलों में उनके किस तरह से अहसास हो रहा है, कितनी तकलीफ इस बात की है, यह सब क्यों है? इसीलिये है कि वह जात एक ऐसी जात है, वह इन्सान ऐसा इन्सान है जिस इंसान को सभी चाहते हैं और इससे ज्यादा कीमत किसी इंसान की हो नहीं सकती कि उसके मुखालिफ भी, उसके वजूद को अपने लिये गनीमत समझते हैं, इससे ज्यादा क्या इन्सान के अन्दर बड़ाई हो सकती है और क्या खूबी हो सकती है? अब मैं इखलाक की तारीफ आपसे करूं, इस हाउस से करूं इस हाउस को तो तजुर्बा पूरा पूरा पंत के इखलाक का है, क्या आप से कहूं कि पन्त जी कैसे पार्लियामेंटेरियन थे, आप तो आंखों से देख चुके, जानते ही हैं आप उस बात को, तो क्या याद दिलाऊं और क्या तारीफ करूं? मैं तो एक छोटा सा फिकरा अर्ज करता हूं जरा सा और मैं समझता हूं उससे सभी इत्तिफाक करते होंगे इस हाउस में जितने मेम्बर हैं और जो सभी सुनेंगे वह भी इत्तफाक करेंगे और वह यह है कि मुझमें, आपमें इनमें, उनमें सबमें मिलकर जितनी खूबियां गिनाई जा सकती होंगी, उतनी अकेले पन्त में हैं। किसी में कोई खूबी है, किसी में कोई, किसी में कोई, इन सब इन्सानों की खूबियों को जमा कर लें और यह देख लें कि पंत उन खूबियों का एक मुजस्सिम और एक इखलाकी नमूना हमारे सामने मौजूद है।

अब दिल्ली तशरीफ ले जा रहे हैं और हमको अहसास यह है कि हमसे जुदाई हो रही है। खैर, मुझको तो उतना बड़ा अहसास जुदाई का नहीं है जितनी कि असली तौर पर जुदाई समझी जा रही है। पंत जी हमारे हम पंत जी के, यह उत्तर प्रदेश पंत जी का, पंत जी उत्तर प्रदेश के। अब यह ताल्लुक जो है यह कोई टूटने वाले नहीं है, न कभी टूट सकते हैं; या हम यह समझें कि पंत जी को कोई मौका उत्तर प्रदेश की इमदाद का नहीं रहा, यह भी नहीं है। पंत जी उत्तर प्रदेश की खिदमत किये जायेंगे वैसे ही। जो तरीका वहां से खिदमत करने का है, उसी तरीके से वह खिदमत आपकी बराबर होगी, जिस हिदायत, जिस मदद की हमको जरूरत होगी वह मदद भी हम को मिलेगी। मगर हां, आंखों को वह सुख और दिल को वह आराम और चैन जो अब तक इस नजर से कि पंत जी बैठे हैं, यहां नहीं तो उस दफ्तर में बैठे हैं, यह जरूर हासिल नहीं रहेगा। इससे इंसानों की तबियत को बेचैनी जरूर होती है लेकिन इसके साथ ही हमको यह सोच लेना है कि अब हमारा क्या फर्ज है। पंत जी का दायरा तो अब बड़ा होने जा रहा है, वह एक बड़े दायरे में हिन्दुस्तान भर का काम करेंगे। पंत जी की वजह से जो न्यामतें हमने हासिल की हैं वह अब दूसरे राज्य भी करेंगे, खुदा को मंजूर है और इसके लिये वहां पंत जी को बुलाया जा रहा है कि उसी किस्म की नियामतें और फायदा उनको भी पहुंचे और हासिल हो। हमको खुशी भी है और हमको इसके ऊपर फख्र भी है और मैं अपने दिल को दुखाने की बात के बजाय दिल को खुश करता हूं इस ख्याल से कि इस उत्तर प्रदेश को खुदा ने यह भी मौका दिया, आज उत्तर प्रदेश इस काबिल है। हममें इतनी काबिलियत है कि यहां से हिन्दुस्तान को और दुनिया को जवाहर लाल जैसे ही नहीं, पंत भी मिलें और जिन पर हमें ही नहीं दुनिया को भी नाज हो सकता है।

इन अल्फाज के साथ जनाब के जरिये से, मैं पंत जी को यह यकीन दिलाता हूं कि हम, जिन आपके साथियों को जिनको खिदमत करने का मौका रहा आपकी हिदायत में, जो रास्ता आपने बताया है, दिखलाया है, जिस तरह की खिदमत का ढंग सिखला दिया है, वही खिदमत का ढंग वही रास्ता लेकर आगे चलेंगे और उसी रास्ते पर चलते हुये हम आपके विचार, आपकी रवायत को कायम रखेंगे और इस उत्तर प्रदेश की खिदमत ज्यादा से ज्यादा करेंगे। आपने जो काम उठाया है उसको बढ़ायेंगे, जो काम बन रहा है उसको बढ़ायेंगे, जो शुरू हुआ है उसको पूरा करेंगे और अगर किसी नये काम की जरूरत होगी तो उसको पूरा करेंगे और आपसे इस

तरह से ताल्लुक रखेंगे। इन अल्फाज के साथ में पंत जी को यह यकीन दिलाता हूं यह जुदाई का मामला मैंने अर्ज कर दिया है, उससे मेरा मतलब नहीं है, कि एक बात है जो मैं सही सही अर्ज करता हूं। आज पंत जी तशरीफ ले जा रहे हैं और मैं हर आदमी के जज्बे को जाहिर करता हुआ क्या कहूं? ईरान में शीराज के रहने वाले एक शायर हो गये हैं। शेख सादी उनका तखल्लुस था। उनको दुनिया भर जानती है। उनका एक शेर है फारसी में, मैं उसका तरजुमा कर दूंगा लेकिन उससे ही सबका ख्याल जो है वह जाहिर होता है। उनका शेर यह है :—

दीदये सादी व दिल हमराह तुस्त,
तान पिन्दारी कि तनहा मीरबी।

मतलब इसका यह है कि—

ऐ पंत जी यह न समझिये कि आप अकेले जा रहे हैं आपके साथ हमारी आंखें और हमारा दिल भी जा रहा है और हम आपके साथ लगे हुये हैं।

(तालियां)

श्री रामनारायण त्रिपाठी (जिला फैजाबाद)—अध्यक्ष महोदय, भारत ने अपनी प्राचीन परम्पराओं से लेकर अब तक यह सिद्ध कर दिया है कि इस देश में विचार विभिन्नता किसी व्यक्ति के आपसी संबंधों में कभी खलल नहीं डाल पायी। महाभारत का उदाहरण आपके सामने है दिन भर युद्ध करने के बावजूद भी रात को फिर लोग मिलते थे और यहां तक कि युद्ध के संबंध में उचित परामर्श करते थे। उन्हीं को ध्यान में रख करके आज मैं अपनी एक कठिनाई आपके सामने रख देता हूं कि जब से इस प्रदेश में मंत्रि मंडल में हेरफेर का समाचार शुरू हुआ तब से मैं आज तक बहुत परेशान था कि अपनी भावनाओं को किन शब्दों में व्यक्त करूं। पंत जी के यहां से जाने के वियोग में दुखी हूं मगर उनके केंद्र में जाने की बात पर प्रसन्न हुआ। लेकिन आज वह वक्त आ गया है कि मुझे अपनी भावनाओं को कहना ही पड़ा। मैं निश्चित रूप से मानता हूं कि पंत जी के चले जाने से उत्तर प्रदेश राजनैतिक दृष्टि से गरीब हो जायगा लेकिन मैं इस बात से प्रसन्न हूं कि पंत जी के इस जीवन काल में ही उत्तर प्रदेश की वे समस्यायें जो शायद बाद में कठिन होतीं सुलझती जा रही हैं क्योंकि हमारे देश में, अध्यक्ष महोदय, आप जानते हैं कि किसी भी वृद्ध के लिये यह सुख का विषय होता है कि उसके उत्तराधिकारी का प्रश्न भी सकुशलता से उसके जीवन में ही हल हो जाय और आज प्रसन्नता है कि पंत जी को यह सुख प्राप्त है। पंत जी दिल्ली में होंगे फिर भी उनके प्रदेश की जो समस्यायें होंगी वे उचित सहायता समय समय पर किया करेंगे, यह तो सभी की आशा है और इसमें दो रायें हो नहीं सकतीं।

अध्यक्ष महोदय, मेरा कोई बहुत लम्बा निजी परिचय पंत जी के जीवन से नहीं है, अवस्था के कारण, लेकिन जब भी मैंने हर दृष्टि से उनके जीवन का अध्ययन करने की कोशिश की, एक राष्ट्रीय संग्राम के सेनानी की हैसियत से पंत जी इनी गिनी विभूतियों में से हैं जो कि संघर्ष में खरी उतरीं, और आप जानते हैं कि ऐसी विभूतियों का स्थान बहुत कम पूरा हुआ करता है और इस दृष्टि से चाहे हमारे राजनीतिक विभेद हों, रीति नीति में हमारा उनका एकमत न हो, लेकिन किसी भी राजनीतिक कार्यकर्त्ता के लिये पंत जी एक आदर्श हैं। मैंने उनके जीवन के उन अंशों का अध्ययन किया है जब कि वे उत्तर प्रदेश में नेता विरोधी दल की हैसियत से, स्वराज्य पार्टी के नेता की हैसियत से और सेंट्रल असेम्बली में उप नेता विरोधी दल की हैसियत से कार्य करते थे, उस समय का उनका जीवन किसी भी विरोधी दल के नेताओं के लिये एक अनुकरणीय विषय होता है। अध्यक्ष महोदय, पंत जी के व्यक्तिगत जीवन का अगर दो शब्दों में वर्णन करना चाहूं जो वे आलराउन्डर कहे जा सकते हैं। एक मध्यम वर्गीय परिवार में जन्म लेकर उन्होंने इतनी महान उन्नति की जो कि हर एक युवक के लिये अनुकरणीय है, उनका विद्यार्थी जीवन, उनका राजनीतिक जीवन, इस वृद्धावस्था में आजकल जितनी लगन और उत्साह के साथ

[श्री रामनारायण त्रिपाठी]

अपनी रीति नीति के साथ कार्य करते हैं, उसकी तुलना नहीं हो सकती। प्रातःकाल से लेकर रात के १०, ११ बजे तक, जब कि उनके मंत्रिमंडल के और हम में भी, नवयुवकों में धीरे-धीरे आलस्य पैदा होता जा रहा है और चाहते हैं कि कुछ दिन में भी सो लिया जाय, तब पंत जी लगातार अपने कार्य में रत रहते हैं और उनकी कैबिनट के लोग भी उस दौड़ में उनका साथ नहीं दे पाते। अभी हाल की बात है, पिछली मर्तबा जब असेम्बली बन्द हो रही थी और २२ नवम्बर से होने वाली थी तो मैंने पंत जी से निवेदन किया कि सम्भवतः आप कांग्रेस पार्टी की मीटिंग में न जा सकें, कुछ अड़चन होगी अगर पहली दिसम्बर से कर दी जाय तो ठीक है। तो उन्होंने बड़ा आश्चर्य प्रकट करते हुये कहा "रामनारायण, आज एक बड़ी घटना घटी कि मैं आज दिन में सो गया।" आप समझ सकते हैं कि कितने सतर्क रहते हैं वे उनके जीवन को पार्लियामेंटेरियन की हैसियत से आप जानते हैं कि देश के सभी लोग मानते हैं कि उनका स्थान पार्लियामेंटेरियन्स में विशिष्ट रहा है। आप स्वयं अध्यक्ष महोदय, समझ सकते हैं कि कितने वह सतर्क रहते हैं आलस्य से और सब बुराइयों से और अपने कर्त्तव्य पथ में निष्ठ रहने के लिये लगातार परिश्रम करने के लिये कितने तत्पर रहते हैं। उनका जीवन एक पार्लियामेंटेरियन की हैसियत से भी आप जानते हैं, देश के सभी लोग मानते हैं कि उसमें भी वह एक रेयर क्वालिटी रखते हैं और किसी भी पार्लियामेंटेरियन के लिये उनका जीवन अनुकरणीय रहा है। आज पंत जी वहां जा रहे हैं और दुख तो अवश्य इस बात का है, मैं हाफिज जी के साथ हूं इस बात में कि पंत जी यहां नहीं रहेंगे और उत्तर प्रदेश गरीब हो जायगा लेकिन जैसा कि मैंने शुरू में कहा मुझे प्रसन्नता इस बात की है कि उनके जीवन काल में ही यह घटना हो रही है और उनके उत्तराधिकार का प्रश्न हल हो रहा है और वह केंद्रीय सरकार में जाकर जो कुछ यू० पी० के लिये कर सकेंगे उससे हम वंचित नहीं रहेंगे। अन्त में मैं इस कामना के साथ कि पंत जी का जीवन केंद्र में भी उसी तरह सफल हो जिस तरह से यहां रहा है, इस बात की आशा करता हूं कि वह उत्तर प्रदेश और उत्तर प्रदेश की जनता को नहीं भूलेंगे और हमें यह बात महसूस नहीं होने देंगे कि उनके अलग होने से हमें कोई हानि हुई।

गृह मंत्री (डा० सम्पूर्णानन्द)—अध्यक्ष महोदय, जीवनमें, विशेष करके सार्वजनिक जीवन में कभी न कभी ऐसे अवसर आते हैं जिन में कि मनुष्य को किन्ही दुखदायी कर्त्तव्यों का पालन करना होता है। आज मेरे सामने और केवल मेरे सामने ही नहीं बल्कि सदन के जितने भी माननीय सदस्य हैं उन सब लोगों के सामने एक ऐसा ही अवसर उपस्थित है। पंत जी हम लोग उनक पूरे नाम पंडित गोबिन्द बल्लभ पंत को बहुत कम ही लिया करते हैं, पंत जी यहां से जा रहे हैं। उनके जाने के समाचार से इस प्रदेश के हर कोने के निवासियों को और हर वर्ग के लोगों को कितनी तकलीफ हुई है वह तो हमारे सामने है, बनावटी ढंग से नहीं, जिसे अंग्रेजी में कहते हैं स्पान्टेनियस, अपने अपने ढंग पर अपनी अपनी जगह पर अपनी अपनी भाषा में लोगों ने अपनी इस तकलीफ को व्यक्त किया है और आज अभी हाफिज साहब ने हम सब लोगों की दिली भावना को अपने बहुत ही प्रभावशाली शब्दों में प्रगट किया है। उससे अच्छे ढंग पर तो इस बात को जाहिर करना मेरे लिये मुमकिन ही नहीं है। इस सदन की बात ही ली जाय तो केवल इस तरफ के बैठने वालों का ही नहीं बल्कि मेरा दृढ़ विश्वास है और उस विश्वास का प्रमाण अभी उस भाषण से मिला है जो कि माननीय त्रिपाठी जी ने दिया है सभी पक्षों के सभी दलों के लोगों को पंत जी के जाने से तकलीफ है। कोई मनुष्य अजातशत्रु होता है या नहीं, यह मैं नहीं कह सकता। पंत जी का निजी रूप से कोई दुश्मन है या नहीं इसका मुझे पता नहीं, विश्वास होता है कि नहीं होगा– परन्तु राजनीति की बात तो समझ सकता हूं, जानता हूं और यह कह सकता हूं कि जो लोग पंत जी के राजनीतिक विरोधी रहे होंगे, जिन लोगों का संबंध ऐसे राजनीतिक दलों से था और है जो कि आज कांग्रेस से अलग हैं, वह लोग भी इस बात को मानेंगे कि पंत जी जैसा विरोधी मुश्किल से मिलता है। ऐसा विरोधी जो अपने मुखालिफों का भी हर वक्त हर मौके पर लिहाज करे, जो हर वक्त इस बात की कोशिश करता हो और सबके साथ कि कोई बात जानबूझकर ऐसी न हो जाय जिससे कि

किसी विरोधी के हृदय जो जरा भी क्लेश पहुंचे ऐसा विरोधी बहुत मुश्किल से मिलता है। राजनीति में यह गैरमुमकिन होता है कि हर शख्स की इच्छा के मुताबिक काम किया जाय। ऐडमिनिस्ट्रेशन में ऐसे काम करने होते ह जो कि कुछ लोगों को किन्हीं वजहों से नापसन्द हों, लेकिन काम करने के ढंग में फर्क होता है, और मैं समझता हूं कि ऐसा कोई भी शख्स किसी भी दल का इस सदन में नहीं है जिसको हर वक्त पंत जी से विरोध करने के बाद भी इस बात का पूरा भरोसा और विश्वास न रहा हो कि मैं जो कुछ पंत जी के सामने रखूंगा उसको वह निष्पक्षता से पूरे तौर से विचार करेंगे और चाहे वह काम हमें नापसन्द हो, लेकिन जो वह काम करेंगे वह पूरी नेकनियती से होगा। यह एक बहुत बड़ी बात है। यद्यपि मुझसे अलग से किसी से कुछ बात नहीं हुई लेकिन ऐसा मैं समझता हूं कि जो यहां सदन में विरोधी दल से संबंध रखते हैं और बाहर भी, वह इस बात की गवाही देंगे। मेरे जैसे लोगों की गति बड़ी कठिन है क्योंकि हमको पंत जी के सम्पर्क में आने का वर्षों तक मौका रहा है और उस मौके की गहराई भी, हमारे सम्पर्क की गहराई भी बराबर बढ़ती गई। मैं अपनी कहूं कि लगभग २५ वर्ष से ज्यादा हुये जब कि पहले पहल पंत जी का साक्षात हुआ। जाहिर बात है कि वह हमारी मुलाकात, वह परिचय इसलिये था कि हम दोनों एक ही राजनीतिक संस्था से, कांग्रेस से संबंध रखते थे। राजनीतिक मुलाकात थी, राजनीतिक क्षेत्र में काम करने वालों में जैसी मुलाकात होती है, वैसी ही, लेकिन वह बढ़ती गई। लेजिस्लेचर में उनके साथ काम करने का मौका मिला, गवर्नमेंट में उनके साथ काम करने का मौका मिला। जब हमारी ब्रिटिश गवर्नमेंट के साथ स्वाधीनता की लड़ाइयां थीं, उनमें काम करने का मौका मिला। जो कि महज एक राजनैतिक अवेंटेंस होती, उसने कामरेडशिप का रूप लिया, उसे चाहे मैत्री कहिये, अफेक्शन कहिये जो भी शब्द ठीक होते हों, उसका रंग गहरा होता चला गया और जैसा कि मैंने और भी दो एक मौकों पर कहा है कि यह अक्षरशः सत्य है कि पंत जी का और मेरा संबंध एक राजनैतिक नेता और उसके अनुयायी का ही नहीं रह गया, वह तो है, था आगे भी पंत जी कहीं भी रहें, वह तो रहेगा, लेकिन उसके साथ अगर यह कहूं तो उचित होगा कि जैसा कि एक बड़े भाई और छोटे भाई का संबंध होता है मैं अपने शब्दों की बात कहता हूं, हम में से बहुत से लोग स्वर्गीय यूसुफ मेहरअली के नाम से परिचित होंगे, बहुत ही अपूर्व मनुष्य थे, कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी के जन्मदाताओं में से थे। जिस जमाने में हमारी कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी और यों कहिये, कि आर्थोडाक्स कांग्रेस पार्टी जो थी उनमें कुछ मतभेद थे, तब जो कि उनके मुखिया थे, तो उन्होंने बहुत स्नेह के साथ तनजन कहा था "आई नो पंत इज योर वीकनेस"। तो वह बात है, उस वक्त भी सही थी और आज भी सही है और उस बात की सच्चाई पहले से कहीं ज्यादा बढ़ गई है। तो हमारे ऐसे लोगों को इस मौके पर जो तकलीफ हो तो है उसका अनुमान कर सकते हैं। हमारा उत्तर प्रदेश इस देश का बहुत बड़ा अंग है। हजारों वर्ष का हमारा इतिहास इस बात का साक्षी है, लेकिन कई हजारों वर्षों के इतिहास की पोथी पढ़ लेने से तो प्रदेश का बड़प्पन नहीं बना रहेगा। यदि इस हाल के जमाने में भी इस प्रदेश की तरफ से ऐसे काम न हुये होते, इस प्रदेश में ऐसे व्यक्ति न हुये होते। जिन्होंने इस प्रदेश के यश को और इस प्रदेश की कीर्ति को बढ़ाया है तो उस प्रदेश का बड़प्पन भी न बना रहता और यदि ऐसे लोगों की कोई सूची बने और ऐसे लोगों की सूची बना करती है तो निस्सन्देह ऐसे लोगों में पंत जी का नाम ऊंचा रहेगा। स्वाधीनता की लड़ाई में जहां तक राजनीतिक लड़ाई की बात है, जो ब्रिटिश गवर्नमेंट के विरुद्ध हमारे आन्दोलन हुये उनके संबंध में तो कई नाम लिये जा सकते हैं जैसे जवाहर लाल जी का नाम है, टंडन जी का नाम है और उनमें पंत जी का नाम भी है। लेकिन जहां तक लेजिस्लेचर का क्षेत्र है और प्रदेश के रिकंस्ट्रक्शन का क्षेत्र है यानी प्रदेश को विकसित करने का प्रश्न है इसमें यदि किसी एक व्यक्ति का नाम लिया जा सकता है तो सिवाय पंत जी के और किसी दूसरे व्यक्ति का नाम नहीं हो सकता है।

हम लोगों को उनके साथ पुरानी कौंसिल में भी काम करने का थोड़े दिन का मौका मिला है। उन दिनों में न तो आज जैसी गवर्नमेंट थी और न आज जैसा अपोजीशन ही था।

[डाक्टर सम्पूर्णानन्द]

गवर्नमेंट उस जमाने की ऐसी थी कि जिसके सदस्य जानते थे कि हम किसी भी प्रकार से हट नहीं सकते हैं, लाख इलेक्शन हुआ करें लेकिन हम अपनी जगह पर अटल रहेंगें, हमें कोई हटा नहीं सकता है। ऐसी हालत में आप अपोजीशन की कठिनाई को समझ सकते हैं जो वह स्वप्न में भी कभी नहीं सोच सकता था कि यह गवर्नमेंट चाहे कितनी ही निकम्मी क्यों न हो लेकिन अपने सिद्धांतों के अनुसार वह गवर्नमेंट को चला सकेंगे तो उसकी एक विशेष प्रकार की स्थिति हुआ करती है, एक कृत्रिम सा वातावरण हुआ करता है। एक इर्रिस्पोंसीबिल सूरत बन जाने की भावना हो सकती है। जो लोग उस जमाने की कौंसिल की प्रोसीडिंग्स को देख चुके हैं। पोथी पढ़ने से असलियत मालूम नहीं हो सकती है लेकिन फिर भी जो उस जमाने की प्रोसिडिंग्स को पढ़ेंगें उनको मालूम होगा कि उस समय में कैसी प्रोसीडिंग्स हुआ करती थीं। सरकार के आदमी यदि किसी एक व्यक्ति का लोहा मानते थे और उसकी आलोचना से घबराते थे तो वह पंत जी ही थे और तारीफ की बात यह थी कि कहीं भी सौजन्यता में, आपसी व्यवहार में फर्क नहीं आने पाता और प्रयोग में कोई भी कटु शब्द नहीं आने पाता था और साथ ही उनके भाषण ऐसे हुआ करते थे जो सारगर्भित कहे जा सकते हैं और ऐसे भाषण हुआ करते थे कि जिनसे सरकारी पक्ष के लोग तिलमिला उठते थे। उस जमाने में हमें पंत के साथ काम करने का और पार्लियामेंट के काम सीखने का मौका मिला है।

इधर के जमाने में तो हमने आपने सभी ने देखा है, उसको मैं दुहराता नहीं हूं। लेकिन एक बात खयाल रखने की है और वह यह है कि आगे भी गवर्नमेंट्स होंगी और एक से एक लायक आदमी हमारे यहां होंगे। कोई ऐसी बात नहीं है कि हमारा प्रदेश बंध्या हो गया है और आगे कोई लायक आदमी नहीं होगा, जरूर होंगे। लेकिन उनके काम में और इनके काम में, जहां कि स्वाधीनता के बाद काम चलता है, वहां जमीन आसमान का फर्क हुआ करता है। एक बात की बुनियाद पड़ जाती है तो उसके ऊपर फिर एक से एक अच्छी इमारत बन सकती है लेकिन सब से पहले जो इमारत बनती है उसमें बड़ी मुश्किल पड़ती है और जमाना हमारे सामने है।

स्वाधीनता के बाद शासन हमारे हाथ में आया है लेकिन साथ ही प्रदेश के चारों ओर नहीं तो दो ओर साम्प्रदायिक आग इतनी भयंकर रूप से लगी हुई थी कि उसकी लपटें बड़े जोरों के साथ हमारे यहां आ रही थीं। यदि उस समय कोई चीज न संभाल ली गई होती तो बहुत संभव था कि जो हालत पंजाब और बिहार के हिस्सों में हुई वही हालत उत्तर प्रदेश की भी हो सकती थी लेकिन यहां पर कोई ऐसी चीज नहीं हो सकी? वैसे तो यह इतना बड़ा प्रदेश है और इसमें सवा छः करोड़ आदमी रहते हैं। एक कहावत है कि जहां १० बरतन होते हैं वहां वह खटक जाया करते हैं तो यहां तो आदमी हैं अगर कोई छोटी मोटी बात हो जाय तो उसे साम्प्रदायिक झगड़ा कहना मुनासिब नहीं होगा। अगर साम्प्रदायिक वैमनस्य की बात हो सकती है तो वह हमारे प्रदेश में इस समय तक नहीं हुई और साम्प्रदायिक शांति है। बड़ी भारी शांति है। जो बहुमत में लोग हैं उनका शांत होना तो ठीक ही है। जो अल्पमत में हैं वह भी इस बात को मानेंगे कि उनको जितनी शांति से रहने का मौका मिला है, अपने अधिकारों को अच्छी तरह से उपयोग करने का मौका मिला है वह इस देश के इतिहास के लिये एक गौरव की चीज है। मानना होगा कि इसके लिये बहुत बड़ा श्रेय पंत जी को है।

इसके अलावा जो खाने पीने की समस्या थी, एक एक चीज की मोहताजी थी, लोगों के पास पैसा हो, दूकानों पर इस तरह से भीड़ लगती हो जैसे भीख मांगने के लिये आये हों, वे मुसीबतें आज नहीं हैं। और जितने, कई काम, जो हुये हैं जिनमें से कुछ की तरफ हाफिज जी ने इशारा किया जैसा कि हाफिज जी ने कहा मिनिस्टरों को और जिनको उन्होंने काम सौंपा होगा उन्होंने किया होगा, लेकिन लोगों से काम लेना बड़ा मुश्किल काम होता है। काम करना मुश्किल होता है। लेकिन काम लेना बहुत मुश्किल होता है। सहयोग लेना मुश्किल होता है

लेकिन सहयोग प्राप्त करना बड़ा मुश्किल काम होता। इस दृष्टि से अगर स्वाधीनता के बाद उत्तर प्रदेश का कल्याण करने में अगर किसी एक व्यक्ति को श्रेय है तो वह व्यक्ति पंत जी हैं। इसमें रत्ती भर भी संदेह नहीं है, मैं समझता हूं कि इस बात को हम सब लोग जानते हैं। मैं आपके सामने और क्या निवेदन करूं। पंत जी यहां से जा रहे हैं। लेकिन जैसा कि हाफिज जी ने कहा, जाते हुये बहुत ज्यादा दुख की बात कहना एक प्रकार की किसी की यात्रा में अपशकुन करना होता है। वह बहुत अच्छी बात भी नहीं। बाकी लौकिक दृष्टि से जो कुछ बात हो। असल में दूरी और नजदीकी हृदय की, आपस के स्नेह की होती है और हम इस बात को जानते हैं कि पंत जी दिल्ली भले ही जा रहे हैं, लेकिन जहां तक दूरी और नजदीकी की बात है वह हमेशा हमारे नजदीक रहेंगे। भुलाने का प्रश्न तो उठता ही नहीं। बार बार यह कहना कि भूल न जाइयेगा इसका कोई अर्थ नहीं। न वह हम को छोड़ सकते हैं, न हम उनको छोड़ सकते हैं। हमारा स्वार्थ इस बात में हो, पंत जी सदैव हमारे निकट बने रहें, लेकन हमारे लिये यह गौरव की बात है कि पंत जी की जिस कार्य शैली और प्रतिभा से हमने आजतक लाभ उठाया उसका लाभ सारे देश को होने जा रहा है। यह भी मानना होगा कि इस देश के जो सर्वोच्च नेता हैं, चोटी के नेता हैं वो एक, उनमें पंत जी का स्थान है। और यह सर्वथा उचित है कि पंत जी की प्रतिभा, पंत जी की योग्यता पंत जी ने जो स्थान अपनी योग्यता से देश के राजनीतिक क्षेत्र में पैदा किया है, उसका पूरा पूरा फायदा देश को मिले। प्रधान मंत्री जी को भी इससे सहायता मिले और देश का कल्याण हो, यों तो देश के कल्याण में उसके हर अंग का कल्याण होता रहेगा। और इस प्रकार हमारा भी कल्याण होता रहेगा। लेकिन जो हमारा हिस्सा मिलेगा उसको छोड़ कर पंत जी की कृपा मिलती रहेगी। जो भी हमारी कठिनाइयां होंगी उनको हमारे व्यक्त करने से पहले पंत जी खुद ख्याल करेंगे। आज निर्माण के तरह-तरह के जो विकास के काम हो रहे हैं उन सब कामों में रुपये पैसे की केंद्रीय सरकार की बहुत तरह की मदद की जरूरत होती है। यों तो हमें मदद मिलती रही है। लेकिन पंत जी के रहने से केंद्रीय सरकार द्वारा उत्तर प्रदेश को और भी सहायता मिलती रहेगी इसमें कोई संदेह नहीं। कुछ रुपये पैसे की बात नहीं। जैसी भी जरूरत होगी उसके लिये उनकी कृपा रहेगी। और उन लोगों के ऊपर उनकी कृपा है ही और रहनी चाहिये जिनके कंधों पर आज वह अपना काम सौंप कर जा रहे हैं। मैं थोड़े शब्दों में कह सकता हूं कि आप वहां जाते हैं, हम हमेशा आपसे सहायता की उम्मीद रखेंगे। हम को हमेशा इस बात की आशा है और हम चाहते हैं कि आप का जाना मंगलमय हो। इससे देश का कल्याण हो। इसलिये हम दुख और शोक की बात कह कर इसमें अपशकुन नहीं करना चाहते।

*महाराजकुमार बालेन्दुशाह (जिला टेहरी गढ़वाल)---अध्यक्ष महोदय आज हम सब पंत जी को दिल्ली जाने के अवसर पर विदाई देने के लिये एकत्रित हुये हैं। हम सब पंत जी को हार्दिक विदाई देते हैं और उन को इस बात का विश्वास दिलाते हैं कि हालांकि अब वह यहां न रहेंगे और अब दिल्लीके मंत्रिमंडल में जा रहे हैं फिर भी वे हमेशा हमारे विचारों में रहेंगे।

अध्यक्ष महोदय, मेंटल एडैप्टिबिलिटी मनुष्य जाति के लिये एक गुण है। कुछ समय तक हाल ही में, पंत जी के दिल्ली जाने का समाचार आम हुआ, सब लोगों ने इसके खिलाफ आवाज उठाई और मैं आश्चर्य करता हूं कि आज जब यह एक बीती हुई बात हो गई है जब पंत जी का दिल्ली जाना एक निश्चित बात हो गई है तो हम किस प्रकार से और किस सरलतापूर्वक अपने आपको एक सांत्वना दे रहे हैं और अपने आपको कंसोलेशन दे रहे हैं कि चलो यह एकअच्छी बात हुई। अध्यक्ष महोदय, इस संबंध में हमें कहा जाता है कि प्राथमिकता का प्रश्न उठता है और हमें यह देखना है कि आया पंत जी के दिल्ली जाने से देश का अधिक लाभ होगा या यहां रहने से अधिक लाभ होगा। इस बीती हुई बात को उठाना और उसके संबंध में चर्चा करना शायद उचित न होगा। किन्तु मैं इस समय कहना आवश्यक समझता हूं चाहे प्राथमिकता के दृष्टिकोण से पंत जी का दिल्ली जाने से ही देश को अधिक लाभ हो, फिर भी मेरा व्यक्तिगत विचार यह है कि यदि पंत जी के दिल्ली जाने से देश को अधिक लाभ होगा तो उन सरीखे व्यक्तियों का प्रदेश

*वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

[महाराजकुमार बालेन्दुशाह]

की जिम्मेदारी संभालना, इससे देश को और भी अधिक लाभ होगा। मैंने जैसा कहा कि एक बीती हुई बात है और मैं केवल यहीं कहूंगा कि इस संबंध में कुछ अधिक कहना आवश्यक भी नहीं है। पंत जी दिल्ली जायं, हम उनको हार्दिक विदाई देते हैं लेकिन हम उनका पीछा नहीं छोड़ेंगे। इतना मैं अवश्य चाहता था कि पंत जी के दिल्ली जाने या न जाने के संबंध में हम विरोधी दलवालों की भी राय अवश्य ले ली जाती तो उचित होता। और आखिर पंत जी कांग्रेस दल के ही नेता यहां नहीं रहें, पंत जी को सम्पूर्ण सूबे का नेता हमने भी माना और अब उनको जब दिल्ली भेजा जा रहा है या जब उनसे दिल्ली जाने की रजामन्दी प्राप्त की गई तो मैं समझता हूं कि यह उचित होता कि हम सबकी भी कुछ राय ले ली जाती। और इस संबंध में, अध्यक्ष महोदय, मैं स्पष्ट रूप से कहना चाहता हू कि हम कदापि पंत जी को दिल्ली जाने न देते। खैर, पंत जी दिल्ली जायं और इस बात में कोई शुबहा नहीं कि पंत जी हमें भूलेंगे नहीं। और अन्त में यही कहूंगा कि पंत जी से हालांकि मेरा व्यक्तिगत परिचय बहुत अधिक नहीं रहा, मेरे दुर्भाग्य से पहले से उनसे जान पहचान नहीं हो सकी, लेकिन मैं इतना कहना आवश्यक समझता हूं कि जिस जगह से मैं आता हूं वहां पंत जी के संबंध में ग़लतफहमी सी थी और मुझे हर्ष है कि यहां आकर और उनसे परिचय होने के बाद वह ग़लतफहमी बिल्कुल दूर हो गई है और उसमें मुझे कोई भी सच्चाई बिल्कुल प्रकट नहीं होती। पंत जी का जो जीवन है और पंत जी ने जिस प्रकार अपने जीवन को व्यतीत किया है, उसके संबंध में मुझे एक पंक्ति याद आती है। लांगफेलो ने लिखा है—:

"Lives of great men all remind us,
We can make our lives sublime"

उनकी बराबरी करना तो हमारे लिये संभव नहीं लेकिन लक्ष्य यही रहेगा कि उनके द्वारा पथ पर चलने की चेष्टा करें और यही हम अपना कर्त्तव्य समझेंगे कि जैसा पथ प्रदर्शन पंत जी ने किया उस पर हम चलें।

*श्री वीरेंद्रपति यादव (जिला मैनपुरी)—अध्यक्ष महोदय, इसमें संदेह नहीं कि आज पंत जी हमसे दूर जा रहे हैं जिसके कारण इस प्रदेश के प्रतिनिधियों को ही नहीं बल्कि जनता को भी दुख है, लेकिन कुछ संतोष इसमें है कि पंत जी जा तो रहे हैं लेकिन इस प्रदेश की सीमा से कुल ११ मील की दूरी पर ही बैठेंगे। पंत जी जिस तरह से इस देश का संचालन करते रहें हैं उसी तरह से इस प्रदेश की सीमा से ११ मील दूर बैठकर भी इस प्रदेश का संचालन करते रहेंगे। पंत जी के राजनैतिक जीवन का वर्णन हम अच्छी तरह से नहीं कर सकते। अगर उनके राजनैतिक जीवन पर हम कुछ प्रकाश डालें तो एक बड़ी सी बात होगी, लेकिन हम यह कह सकते हैं कि पंत जी के शासकीय जीवन से हमको जानकारी है और वह केवल इस तीन साल के सम्पर्क से नहीं बल्कि विद्यार्थी जीवन के होने के नाते हमको जानकारी है। अपने विद्यार्थी जीवन काल में हमने उनके शासकीय कार्यों को पढ़ा है और इस नतीजे पर आये हैं कि वास्तव में उन्होंने इस बात की चेष्टा की है कि इस प्रदेश को एक आदर्श प्रदेश बनाया जाय। हम यह भी कह सकते हैं कि पंत जी वास्तव में, इस देश के उन मुख्य मंत्रियों में थे जिनको वास्तव में एक आदर्श मुख्य मंत्री कहा जा सकता है। आमतौर पर यह होता है कि एक मंत्री जिस विभाग का संचालन करता है वह उसी विभाग की विशेष जानकारी रखता है, लेकिन हमने देखा कि पंत जी ने यहां पर जिस तरह से शासकीय कार्य संभाला उससे हमको यह पता लगा कि कोई विभाग ऐसा नहीं था कि जिसमें पंत जी को विशेष रुचि न हो। मैं तो यह कह सकता हूं कि आज पंत जी के सामने किसी भी विभाग की समस्या को लेकर चला जाय और उनसे प्रश्न किया जाय तो हमारे मुख्य मंत्री जी उन प्रश्नों का उसी तरह से उत्तर दे सकते हैं जिस तरह से कि एक संबंधित विभाग का मंत्री उत्तर दे सकता है।

---

*वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

जहां तक कि न्याय के संबंध के मामलों की समस्या का संबंध है, यह बहुत कम देखा गया है कि एक शासकीय अधिकारी में वह सब चीजें इकट्ठा हों जो कि एक न्यायाधीश में हुआ करती हैं, लेकिन उनके सम्पर्क में रहकर हमने देखा कि वास्तव में अगर एक मुख्य मंत्री को शासकीय अधिकारी की हैसियत से उनको न्यायाधीश कहा जाय तो यह गलत बात नहीं होगी। अभी २, ४ दिन हुये हम लोग पंत जी के पास बैठे हुये थे तो वास्तव में एक जिलाधिकारी के संबंध में उन्होंने इतनी उचित बात कही कि जिसके लिये हम लोग उनकी हृदय से प्रशंसा करते हैं। वह क्या चीज थी जिसको हमको अपनाना चाहिये और उससे हमको सबक ग्रहण करना चाहिये? एक जिलाधिकारी वहां पर बैठा हुआ था। उससे उन्होंने कहा कि यह अधिकारी जो वहां पर है अगर उसको वहां से हटा दिया जाय तो ठीक होगा या नहीं? उस अधिकारी ने जवाब दिया कि वह अधिकारी तो ठीक है और उसमें किसी प्रकार की त्रुटि नहीं है। लेकिन हमारे पंत जी ने उनसे यह कहा कि उनका वास्ता एक अमुक व्यक्ति से है जो यहां पर सरकार में है। उससे आमतौर पर लोगों का ख्याल होता है कि यह मुमकिन हो सकता है कि उनके न्याय करने के काम में कुछ बाधा पड़े। लेकिन उन्होंने इस बात को महसूस किया कि यह चीज नहीं है और लोगों का आम ख्याल नहीं हो सकता है। इस चीज को पंत जी ने महसूस किया। पंत जी के कहने का मतलब यही था कि न्याय होना चाहिये। हमारे पंत जी ने उसी सिद्धांत को अपनाया जिसको अपनाने की आवश्यकता है। वास्तव में जिस प्रकार से उन्होंने अच्छा शासकीय कार्य किया है, न्याय के संबंध में अच्छा कार्य किया है, और जिस प्रकार से इन्तजाम किये हैं, उससे हम लोग सभी प्रभावित हुये हैं। मैं पंत जी के बारे में अधिक नहीं कहना चाहता और यह उचित भी नहीं होगा, और वह सब बुजुर्ग यहां पर कह चुके हैं। मैं केवल इतना कह देना चाहता हूं कि पंत जी आज हमारे प्रदेश से जा रहे हैं। इससे हमारी हानि अवश्य है, लेकिन हम यह समझते हैं कि इतनी हानि नहीं होगी जितना कि प्रदेश का लाभ होगा। उनसे जो लाभ सारे प्रदेश का होगा उस लाभ में हमारा देश भी हिस्सेदार होगा। हम समझते हैं कि उत्तर प्रदेश सब से ज्यादा उस लाभ का हिस्सेदार होगा। इस प्रकार से हमारा यह प्रदेश और भी भविष्य में उत्तरोत्तर उन्नति करता जायेगा। इन शब्दों के साथ मैं पंत जी के राजनैतिक काल की प्रशंसा करना चाहता हूं।

*श्री हेमवतीनन्दन बहुगुणा (जिला इलाहाबाद)--माननीय अध्यक्ष महोदय, आज इस सदन में पंत जी की विदा के संबंध में जो भावनायें भिन्न भिन्न सदस्यों ने और मेरे बुजुर्गों ने प्रदर्शित की हैं, उनके साथ साथ मैं अपनी तुच्छ बुद्धि के अनुसार चन्द बातें और कहना चाहता हूं माननीय पंत जी हमारे प्रांत के निर्माता हैं लेकिन इसके साथ ही साथ वे हमारे प्रांत के राजनैतिक जीवन, राष्ट्रीय जीवन की समस्त विचारधाराओं के निर्माता हैं जो प्रगतिशील बातों से संबंध रखती हैं। हमारे प्रदेश की शासन व्यवस्था में वेलफेअर स्टेट का जो स्वरूप प्रदान करने की चेष्टायें हैं जिनका संबंध हमारे जीवन के भिन्न भिन्न अंगों से है। पंत जी के शासन काल में उनको देखने के पश्चात् विशेषकर हम नवयुवकों के लिये और प्रांत के रहने वाले करोड़ों गरीबों के लिये ऐसा मालूम होता है कि पंत जी ने जो परम्परायें चालित कर दी हैं वे परम्परायें हमारे एडमिनिस्ट्रेटिव सेटअप का अंग बन गयी हैं और रहेंगी। मेरा विश्वास है कि मेरे जैसे जो भी माननीय सदस्य हैं, जो नये हैं, जो पहली बार ही एसेम्बली में आये हैं, उन्होंने पंत जी से सदन के अन्दर और बाहर दोनों प्रकार से लाभ उठाया है और उनकी बातें हमारे जीवन का अंग बन गयी हैं। मेरा विश्वास है कि हमारे राष्ट्रीय जीवन में बहुत कम ऐसे नेता हैं जिनसे बात करने के बाद आदमी यह महसूस करे कि उनसे भिन्न राय वह रख ही नहीं सकता। यह पंत जी का एक विशेष गुण है। लोग उनसे लम्बी चौड़ी बहस भी करते हैं लेकिन बहस करने के बाद जब वापस लौटने लगते हैं तो मन ही मन यह गुनगुनाने लगते हैं कि हम जो सोचते थे वह हो ही नहीं सकता और जो पंत जी सोचते थे वही हो सकता है। उनमें यह गुण नया नहीं है। मैंने एक कहानी सुनी थी और उस कहानी की बात उन पर लागू होती है। जब वे वकील थे

*वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

[श्री हेमवतीनन्दन बहुगुणा]

तो अंग्रेज कमिश्नर को यह परेशानी होती थी कि जिस तरफ पंत जी होते थे उसके खिलाफ फैसला कैसे करूं। उसने एक दूसरे जिला अधिकारी से पूछा कि जब पंत जी बहस करते हैं तो उनके खिलाफ फैसला कैसे करते हो? उसने कहा कि जब मुझे उनके खिलाफ फैसला करना होता है तो मैं उनकी बहस को सुनने से ही इंकार कर देता हूं। अपनी आंखें बन्द कर लेता हूं और कान भी बन्द कर लेता हूं। आज भी वह बात उतनी ही सत्य है जितनी कि उस समय थी और ऐसी ही सत्य वह रहेगी। उनके विचारों की स्पष्टता, उनके भावों की उज्ज्वलता, उनके विचारों की आकर्षणता से सभी प्रभावित रहते थे। जब पंत जी यहां से जा रहे हैं तो हमें इस बात की बड़ी भारी प्रसन्नता है कि वह अपने स्वप्निल प्रांत के महल की बुनियाद रख कर जा रहे हैं जिसके द्वारा प्रांत की गरीब और साढ़े छै करोड़ जनता की रक्षा हो सकेगी। अब आगे जो भी आने वाले हैं उनको भी उसी बुनियाद पर महल बनाना होगा, उस नींव पर दूसरे प्रकार का कोई महल बना नहीं सकते। पंत जी ने जो एडमिनस्ट्रेटिव परम्परायें तथा पार्टी के जो ट्रेडीशन्स कायम कर दिये हैं, मंत्रीगण तथा आने वाले नेता लोग उन्हीं बातों पर चलते ही रहेंगे और उसी प्रकार से प्रदेश का भला कर सकते हैं।

यह बात होते हुये भी पंत जी दो एक मुश्किल समस्याओं को छोड़कर जा रहे हैं। उनमें एक गन्ने की समस्या है। पंत जी दिल्ली जा रहे हैं और देहली और लखनऊ के बीच में गन्ने को लेकर काफी चर्चा रही। मैं नहीं जानता कि यह हमारा याद दिलाना इस मौके पर इतना मुनासिब होगा। लेकिन फिर भी मैं उनको जरूर याद दिलाना चाहता हूं कि हमारे प्रदेश के गन्ने के किसानों की बड़े जोरों की शिकायत है कि टैरिफ बोर्ड के रिकमेंडेशन और गन्ना प्राइस स्ट्रक्चर के बावजूद भी किसानों को करीब-करीब ५ आने मन कम पैसा मिलता है। मैं समझता हूं कि देहली जाकर आप इसका कोई हल निकालेंगे। गन्ने की कीमत को लेकर एक बड़ी भारी समस्या हमारे प्रदेश में पैदा हो गयी है और हमारे प्रदेश के किसानों का और हमारे प्रदेश की सरकार का भी कोई भारी लाभ हो सके, तो मैं समझता हूं कि पंत जी वहां बैठ कर उस कार्य को अवश्य करेंगे। इसी तरह की हजारों समस्यायें हमारे देश की आवेंगी और पंत जी देहली में रहेंगे तो मेरा पूर्ण विश्वास है कि उनका वरद्हस्त उत्तर प्रदेश की सरकार पर, उत्तर प्रदेश की जनता पर और उत्तर प्रदेश के रहने वाले करोड़ों गरीब इंसानों पर हमेशा के लिये बना रहेगा ताकि हम आगे बढ़ें और बढ़ते चले जायं जब तक कि हम अपनी मंजिल पर न पहुंच जायं। इन शब्दों के साथ मैं पंत जी को धन्यवाद देता हूं उन सब बातों के लिये जोकि एक गुरू बनकर उन्होंने हमको यहां दीं, और मैं उनको विश्वास दिलाता हूं कि उनकी दी हुई दीक्षा पर चलने का सतत प्रयास मेरी तरह के लोग और मैं बराबर करता रहूंगा।

श्रीमती चंद्रवती (जिला बिजनौर)---श्रीमान् अध्यक्ष महोदय, इस समय हमारे सामने विदाई की बेला है और इस बेला को अगर मैं "पंत विदाई बेला" कहूं तो अनुचित न होगा। इसके अलावा मैं समझ नहीं पा रही हूं कि शब्द और भाव व्यक्त करने का साहस किस तरह से बटोरूं जिससे कि अपने भाव व्यक्त कर सकूं। शब्दों से तो ज्यादा इस भवन के जितने माननीय सदस्य हैं उनके चेहरे से जाहिर हो सकता है और भावों में शब्दों द्वारा व्यक्त किये हुये उनके हृदय की पुकार को अगर सुना जाय तो ज्यादा आभास हो सकता है। आज से हमारे प्रदेश की इस बेला को कम से कम इस भवन में बैठने वाले सभी माननीय सदस्यगण प्रति दिन इस सदन में आने के समय पर एक बार अवश्य इसे अपने हृदय विभोर स्मृति के रूप में पाया करेंगे। पंत की भी सजीव मूर्ति उसी स्थान पर दृष्टिगोचर हो जाया करेगी ऐसा मेरा पूर्ण विश्वास है। मैं समझ नहीं पाती कि इस बेला को किसकी उपमा देकर मैं व्यक्त करूं। मेरी समझ में तो यह एक ऐसी बेला है जिसमें एक ओर तो उदासीनता का भाव उतना ही है, दूसरी ओर हर्ष का भी भाव उतना ही है। हर्ष तो इसलिये है कि हमारे प्रांत का एक महान् व्यक्ति इस योग्य है जिसको कि केन्द्रीय मंत्रिमंडल से आग्रह मिला और हमलोग उनको अपना एक

धरोहर का रूप उन्हें सौंप रहे हैं और जिसका कि हमें गौरव प्राप्त हुआ। जिस वक्त लड़की घर से विदा होती है तो उस वक्त हमलोगों में उदासीनता और हर्ष का इतना ही भाव पाया जाता है जैसा कि इस वक्त सब के मुंह पर और हृदय में पा रहे हैं। उस वक्त खुशी तो यों मनाते हैं कि लड़की को विदा करते समय हम एक योग्य वर को प्राप्त हुये और उसे सौंपते हैं जिससे कि वे दोनों नव दम्पत्ति बन कर अपनी प्रतिभा को चमका कर गृह के अच्छे काम करें। दूसरे रूप में उदासीनता इसलिये आभासित होती है कि उस लड़की को हमारे नज़दीक से दूर जाना पड़ेगा। अतः एक प्रकार विदा हो ही जायेगी और उतना निकट न रह पायेगी। इस विदाई के अवसर पर भी कुछ उसी प्रकार के भावों का सम्मिश्रण सा मालूम होता है, लेकिन पंत जी के महान व्यक्तित्व के लिये मैं कुछ प्रशंसा के शब्द चुनूं, तो मैं सोचती हूं कि वह मेरे माननीय भाइयों ने काफी व्यक्त कर दिये हैं, और उसी गीत को दोहराना ऐसा है कि जिस तरह से उसी बात को बार-बार दोहराने से उस का मूल्य कम करना है। पर मैं इतना विश्वास दिलाती हूं कि पंत जी की प्रशंसा के गीत भारतीय इतिहास में स्वर्णाक्षरों में अंकित हो कर सदा के लिये चमकेंगे और भविष्य में आने वाले बच्चे और संतानें उन पर चलने और अनुसरण करने में सहायता लेती रहेंगी। इस समय मैं अधिक भाव व्यक्त करने में अपने को असमर्थ पाती हूं और मुझे महाकवि सूरदास की पंक्तियां इस समय स्मरण हो आ रही हैं जो मेरे भावों को अधिक व्यक्त कर सकती हैं जिनमें उन्होंने श्रीकृष्ण जी के लिये अपने भाव इस प्रकार व्यक्त किये हैं कि--

"बांह छुड़ाये जात हो निबल जानि के मोहि,
हृदय से जब जाओगे, सबल कहूंगा तोहि।"

श्रीमती प्रकाशवती सूद (जिला मेरठ)--माननीय अध्यक्ष महोदय, आज इस अवसर पर जब कि हम अपने बड़े नेता को विदाई देने के लिये बैठे हुये हैं चन्द शब्दों में भगवान से प्रार्थना करना चाहती हूं कि कि ऐसे समय में वह, हम इस प्रदेश के रहने वालों को शक्ति दे, बल दे कि जिससे हम इस वियोग को सह सकें। यह वह सूरज है कि जिसने अपने तेज से, अपने प्रकाश से, अपने तप से इस प्रदेश पर चमक कर इसको भारतवर्ष में एक उच्च स्थान दिया। आज वह तेजोमुखी सूरज केन्द्र में, भारतवर्ष की राजधानी में चमकने जा रहा है। आज हमारे इस प्रदेश के रहने वाले और हम, भगवान से प्रार्थना करना चाहते हैं कि हे ईश्वर! जिस तरह से उन्होंने इस प्रदेश में रहते हुये इस प्रदेश का नाम ऊंचा किया, उसी तरह से यह सूरज उस केन्द्र में बैठ कर भी चमके और उसकी किरणों का प्रकाश सदा इस प्रदेश पर भी छाया रहे। आज हमारा भरा हुआ दिल प्रेम और स्नेह से उछल रहा है। पन्त जी यहां से जा रहे हैं--वियोग है और साथ ही खुशी भी है कि हमारा भारतवर्ष उन्नति करेगा, उनके प्रकाश से, उनके तेज से, शक्ति से भारतवर्ष को बल मिलेगा, इस प्रदेश के रहने वालों को बल मिलेगा। अन्त में फिर हमारी ईश्वर से यही प्रार्थना है कि हम में इस वियोग को सहन करने की शक्ति दे और पूज्य पन्त जी को दीर्घायु दे और उनमें उस शक्ति और बल का प्रसार करे जिससे देश की उन्नति में वह अपना सारा जीवन बलिदान करके भारतवर्ष की सेवा कर सकें।

श्री [illegible] शर्मा (ज़िला अलीगढ़)--आदरणीय अध्यक्ष महोदय, आज पूज्य पन्त जी का जाना किसको नहीं खल रहा है? इस सदन के तमाम सदस्य और तमाम राजनैतिक पार्टियां, चाहे वह कम्यूनिस्ट पार्टी हो, समाजवादी पार्टी हो, जनसंघ हो, चाहे आर० एस० एस० हो सभी को पन्त जी का प्रदेश से जाना खल रहा है और आज दर्शक गैलरी में जिस तरह की भीड़ है वह भी इस बात का सबूत है कि वह भी अपने पूज्य नेता को विदाई के लिये सदन के विचार सुनने के लिये इकट्ठा हुई है। अध्यक्ष महोदय, सब से ज्यादा पन्त जी का जाना उन लोगों को खल रहा है, उन असहायों को, सताए हुए उन गरीबों को, उन साधुओं और उन संन्यासियों को खल रहा है जिनके लिये उनके दरवाजे हर समय खुले रहते थे। सुबह जाइये, शाम जाइये, रात को जाइये, जिस वक्त सुबह वे उठते थे उस

[श्री नेकराम शर्मा]

वक्त भी पन्त जी के यहां लोग मौजूद होते थे और रात को भी जाइए, १० बजे हों या ११, तो पन्त जी का दरवाजा सबके लिये खुला हुआ था। ऐसे नेता, ऐसे रहनुमा के लिये किसको अफ़सोस न होगा, और इसका एकमात्र कारण था श्रीमन् कि पन्त जी के दिल में गरीबों के लिये, असहायों के लिये एक दर्द था। एक दिन पन्त जी के यहां हजारों भिखारी बैठे हुए थे तो मैंने पन्त जी के दिल में जो दर्द देखा , और वह दर्द यह था कि आज भी हिन्दुस्तान में इतनी गरीबी है ? वह सोच रहे थे और वास्तव में महसूस करते थे, जो दिल में दर्द उस वक्त उनके मैंने देखा था उसकी व्याख्या मैं नहीं कर सकता, वह शब्दों में नहीं कही जा सकती।

अध्यक्ष महोदय, पन्त जी के जितने विदाई के भाषण हुये हैं उसमें उन्होंने जो प्रजातन्त्र की परिभाषा की है शायद राजनीति का विद्यार्थी होने पर मैंने किताबों में भी ऐसी परिभाषा को न पढ़ा और न सुना कि 'प्रजातन्त्र' दिल की चीज है, आत्मा की चीज है, सेल्फ़ एनेलिसिस की चीज है, दिमाग की चीज नहीं। कितनी महत्वपूर्ण बात है, कितनी जबरदस्त परिभाषा प्रजातन्त्र की माननीय पन्त जी ने कर डाली !

मान्यवर पन्त जी उन नेताओं में से हैं जिनकी हर जगह आवश्यकता है। यहां से जाने के बाद जैसा उन्होंने कहा कि वे अधिक काम न कर सकेंगे, और मुझे ऐसा लगता है कि पन्त जी के जाने के बाद , यहां कलह न होगी इसमें शक है मुझे। जब पन्त जी यहां मौजूद थे जो बातें यहां थीं पन्त जी का व्यक्तित्व दबाए रहता था। जो ज्वालामुखी के कहीं-कहीं यदा कदा शोले भड़क उठते थे, पन्त जी जैसे हिमालय के नीचे शान्त हो जाते थे। मुझे भय लगता है कि कहीं से ये शोले उबल न पड़ें ? आज हिन्दुस्तान की उत्तर प्रदेश पर नजर लगी रहती है। मुझे भय लगता है कि क्या वह एकता बनी रहेगी ? क्या पन्त जी के सन्देश को मान कर एकता के सूत्र में हम बंधे रहेंगे। इसमें मुझे कुछ शंका मालूम पड़ती है। मुझे तो कहते हुये दुःख है कि नेहरू जी ने पन्त जी को हमसे छीनकर ग़लती की। कैसे कहूं, यह नहीं कह सकता लेकिन इतिहास और समय बतायेगा कि उत्तर प्रदेश में ऐसे मौके पर, ऐसी अवस्था में जब हम गुजर रहे हैं, पन्त जी को हमसे नहीं लेना चाहिये था और पन्त जी को यहीं रहने देना चाहिये था। पंचवर्षीय योजना की सफलता हमारे स्टेट में हुई है उसका श्रेय उन्हीं को है और इसको पूरा करने के लिये उनका रहना आवश्यक था। पन्त जी खुद अपने भाषण में कहते हैं कि पता नहीं वे वहां जाकर कुछ कर सकेंगे या नहीं ? वास्तव में यहां रहते रहते उनका घर सा हो गया था। सब लोग चाहे किसी भी पार्टी के थे, सब उनको पितामह की दृष्टि से देखते थे। कितने भी विरोधी हों सब आशा करत थ कि जो भी दुख होगा हम पन्त जी के पास पहुंच जायेंगे और उनसे कह लेंगे और दुःख दूर हो जायेगा। पन्त जी के विषय में कोई दो रायें नहीं हैं कि हिन्दुस्तान के बहुत बड़े अर्थशास्त्र के पंडित हैं, प्रजातन्त्र के एक बड़े भारी समर्थक हैं और एक बहुत बड़े पोलिटिकल थिंकर भी हैं। उनमें गरीबों के लिये एक टीस थी, मुहब्बत, प्रेम का सागर वे हैं। कभी पन्त जी के यहां जाइये, पूछने लगेंगे कि कहो कब आये, कैसे हो, कब तक रहोगे और वह भी हंसकर, जैसे मालूम होता था कि हम अपने पितामह के पास आगए। मैंने पन्त जी को एक चिट्ठी लिखी, कि दो साल से कुछ कहना चाहता था लेकिन एकान्त मिलता ही नहीं था। लेकिन जब उनके पास जाता तो कह नहीं पाता था और भूल जाता था उनके प्रेम शब्दों की बौछार में। लेकिन जब पन्त जी के पास में पहुंचता उनको देख कर सब भूल जाते। इतना काम करने के उपरान्त भी उनमें थकावट नजर न आती थी मिलने वालों का तांता बंधा रहता था और उनको कभी झल्लाहट नहीं होती थी। इस प्रकार के नेता को पाकर कौन गर्व न करेगा ? यह उनकी देन है, जो कुछ उन्होंने किया है और दिया है, उसके लिये मैं क्या कहूं समझ में नहीं आता। सारा प्रदेश, देश ऋणी रहेगा। लोग कहते हैं कि वे दिल्ली में रह कर भी हमसे दूर नहीं हैं लेकिन बेढब बनारसी के शब्दों में हम लोग शराफ़त में ही रह गये और दिल्ली पन्त जी को ले भागी, और हम कोसों दूर रह गए। वास्तव में ले भागी और हम लोग कुछ न कर पाये। इस से अधिक मैं

क्या कहूं, केवल अपना दुःख, अध्यक्ष महोदय, इंगलिश की एक छोटी कपलेट द्वारा व्यक्त कर देना चाहता हूं:—

"Thou goest go, but go not without my tears in thy eyes."

श्री मदनमोहन उपाध्याय (जिला अल्मोड़ा)—माननीय अध्यक्ष महोदय, हमारे नेता श्री रामनारायण त्रिपाठी जी ने माननीय पन्त जी के बारे में बहुत कुछ कहा पर उन्होंने एक बात और भी यह कही कि उनका पन्त जी से बहुत वर्षों तक संपर्क नहीं रहा है इसलिये वे उनके बारे में बहुत कुछ ज्यादा नहीं कह सकते हैं। अध्यक्ष महोदय, आज जब इस सदन में मैं भाषण सुन रहा था, मुझे यह महसूस हो रहा था कि किसी ने भी पन्त जी के, जो पर्सनल रिलेशन्स किसी के साथ हो जाते हैं, उस पर कोई चर्चा नहीं की। मेरा यह सौभाग्य है कि मैं अपने बचपन की उम्र से ही, जब मैं करीब १४–१५ वर्ष का था, उनको जानता हूं और पन्त जी को छत्र-छाया ही में इस देश की आजादी की लड़ाई में मैंने भाग लिया और वह बराबर हमें रास्ता दिखाते रहे। जब बचपन में पन्त जी स्वराज्य पार्टी के मेम्बर थे और आनन्द भवन में पं० मोतीलाल नेहरू से मिलने के लिये जाते थे, उस समय मेरा यह सौभाग्य था कि मैं वहीं रहा करता था। तो जब वहां आते थे तो हमें ऐसा मालूम होता था कि हमारे यहां कोई बुजुर्ग हमारे बीच में आ गये हैं। अध्यक्ष महोदय, आज तो हमारा साथ इस राजनैतिक क्षेत्र में है, लेकिन इसके पहले आजादी की लड़ाई में भी हमारा साथ रहा—और मैं गौरव के साथ यह कह सकता हूं कि पर्वतीय क्षेत्रों में जितनी ज्यादा संख्या में लोगों ने उस आजादी की लड़ाई में भाग लिया उसका सारा श्रेय पन्त जी को ही है। जेल में भी मेरा और पन्त जी का साथ रहा और कोई अन्दाजा नहीं लगा सकता कि पन्त जी कितने बड़े स्पोर्टसमैन हैं सबसे पहले मेरा रात दिन का साथ पन्त जी से अल्मोड़ा जेल में हुआ। पन्त जी पहले पहुंचे, उसके बाद वहां पर हरगोविन्द जी और मोहनलाल शाह आये। आपको ताज्जुब होगा यह जान कर कि जेल में बैडमिन्टन पन्त जी इतना अच्छा खेलते थे कि हम सब को उनसे पीछे रह जाना पड़ता था। जब जेल से मेरा ट्रान्सफर हुआ वहां तीन ही आदमी रह गये तो उस दिन रात को दो बजे तक जेल के सुपरिंटेंडेंट को बुला कर उन्होंने इस बात को कोशिश की कि मुझे उस जेल में ही रखा जाय। वह जेल में सुबह होते ही एक चरखा, जिसे हम कृष्ण चरखा कहा करते थे, उसमें ऊन काता जाता था, काता करते थे और हमें हिदायतें दिया करते थे कि फलां किताब पढ़ा करो और जितनी तरह की शिक्षायें दिया करते थे वह आज भी याद आती हैं। कभी कभी मैं यह सोचता हूं कि जिस तरह से हमारी नेताओं की उम्र बढ़ रही है और वे बुड्ढे होते जा रहे हैं, और एक दिन यह दुनिया छोड़ कर जाना पड़ेगा, तो क्या हम अपने वह स्वप्न इनकी जिन्दगी में ही पूरे कर सकेंगे जिनके लिये हमने इस आजादी की लड़ाई में अपनी जीवन की बाजी लगा दी थी। अध्यक्ष महोदय, एक बार जेल सुपरिंटेंडेंट से फैजाबाद में मुझसे लड़ाई हो गई। आपको ताज्जुब होगा यह जानकर कि पन्त जी उसको निपटाने के लिये मुझे अपना बच्चा समझ कर जेल में भी मुकदमा लड़ने गये। हमारा आज राजनैतिक मतभेद है लेकिन अपने देश की भलाई के लिये हम एक हैं। हमारे बुजुर्ग हरगोविन्द जी यहां बैठे हैं, ये पन्त जी से उम्र में बड़े हैं लेकिन पन्त जी से छोटे लगते हैं। अध्यक्ष महोदय, इस आजादी की लड़ाई में पन्त जी का हमारा बहुत साथ रहा है। आज वह यहां से दिल्ली जा रहे हैं, दुःख अवश्य होता है इस बात का, लेकिन खुशी भी है कि आज वह सारे हिन्दुस्तान का भार लेने के लिये जा रहे हैं। अब उत्तर प्रदेश में लौटने का तो उनका प्रश्न उठता ही नहीं है। उत्तर प्रदेश को जिस सहायता की जरूरत होगी वह तो उनसे वह लेता ही रहेगा, लेकिन एक बात अवश्य है अध्यक्ष महोदय, वह यह कि आज तक हम बहुत अफसरों से मिलने के लिये गये, छोटे छोटे अफसरों के पास भी जाते हैं तो कार्ड देना होता है लेकिन पन्त जी ऐसे व्यक्ति हैं कि ऐसा कोई मौका नहीं पड़ा कि जब उनसे मिलने के लिये गया होऊं तो उनको कोई कार्ड देना पड़ा हो। यह मेरा ही नहीं, सारे सदन के मेम्बरों का यह सौभाग्य रहा। हम उनके पास बेधड़क चले जाते थे और उनकी डांट सुनने के लिये तैयार रहते थे। इस हाउस में भी आने का मेरा पहला मौका हुआ है जैसा कि माननीय उपनेता रामनारायण जी

[श्री मदनमोहन उपाध्याय]

का था। हम पन्त जी से इसलिये छेड़खानी करने की कोशिश किया करते थे जिससे कि हम उनसे कुछ सबक सीख लें कि कोई पार्लियामेंटरियन कैसे बन सकता है? सफल पार्लियामेंटरियन बनने की कोशिश हमारी रही और उनका जो पार्लियामेंटेरियनशिप का जो पुराना तजुर्बा है उससे हमने काफी सबक लिया। इस सदन की एक एक ईंट और पत्थर के अन्दर उनकी आवाज भरी हुई है जैसा कि हमारे उपनेता जी ने कहा। हम सबको वेदना है कि हमारे पन्त जी हमारे बीच से जा रहे हैं। लेकिन वह एक अच्छे काम के लिए जा रहे हैं। देश का भार उठाने के लिए जा रहे हैं। हमें खुशी इस बात की है कि आज दिल्ली के अन्दर भी हमारे उत्तर प्रदेश के बगैर काम नहीं चल सका और हमारे यहां का एक नेता वहां जा रहा है, इस बात का हमें घमंड है। हमें आज गर्व है कि उत्तर प्रदेश का ही एक आज प्रधान मंत्री है और उत्तर प्रदेश का एक मंत्री आज वहां बुलाया जा रहा है जिसकी जरूरत इतनी है कि आज सारे हिन्दुस्तान में खलबली मची हुई है। मैं उनके दिल्ली जाने से दूरी महसूस नहीं करता हूं, लेकिन हाउस में उनका अभाव अवश्य हो जायगा। हम उनके चरित्र से सबक ले सकते हैं कि भले ही हम उनसे इत्तफाक नहीं रखते हों, तो भी हम उनके पास जाया करते थे। वह हमें डांट भी देते थे और हमें सिखाने के लिए तैयार रहते थे। इस किस्म के हमारे नेता, जिनके साथ हम बराबर रहे हों, उनके साथ राजनीतिक बिछोह-सा हो रहा है। अब हमें उनके भाषण सुनने को यहां नहीं मिलेंगे। अब तो दिल्ली के पार्लियामेंट में उनका भाषण सुनने के लिए जाना होगा, लेकिन हमें और कोई दुःख नहीं है। पन्त जी की हिन्दुस्तान में जरूरत थी, वहां वह जा रहे हैं। इन शब्दों के साथ हम आशा करते हैं कि पन्त जी दिल्ली में जाकर भी उत्तर प्रदेश के रहने वालों को नहीं भूलेंगे और जो काम उन्होंने प्रदेश के अन्दर किया है, वह सारे भारतवर्ष के अन्दर करेंगे।

*श्री आर्थर ग्राइस (नामनिर्देशित आंग्ल भारतीय)--मिस्टर स्पीकर, सर, मैं खड़ा हुआ हूं कि क्यों न मैं भी शामिल हो जाऊं उन सेंटीमेंट्स में जो यहां एक्सप्रेस किये गये हैं पन्त जी के दिल्ली जाने पर।

श्री अध्यक्ष--आप अंग्रेजी में बोल सकते हैं।

श्री आर्थर ग्राइस--

Thank you, Sir. Sir, I rise to be associated with all the sentiments that have been expressed at Pantji's departure to Delhi. Pantji has not been to me so much a Chief Minister of U. P. as a friend. Every time I have had the pleasure of going to see Pantji regarding some community affair or something that concerned with our schools, he has never turned me away without listening to me and doing something for my community. I will never forget the time when the High School and Intermediate Board refused to accept the students from the Anglo-Indian Schools to give their examination in English. I approached Pantji. Before I went to him I was not absolutely certain that it would be done. But Pantji did it not only for the Anglo Indian community but for every child who had passed through an Anglo Indian School. To my community Pantji has been more a friend than a Chief Minister. And, Sir, my community wish Pantji God speed and may he have the wisdom and courage when he goes to Delhi to carry out the task that has been assigned to him. We know that Pandit Nehru is alone and Pandit Pant will be a stable asset to him. We all pray that God may give Pantji health and strength.

---

*वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

(धन्यवाद, श्रीमान जी ! श्रीमन्, पन्त जी के दिल्ली प्रस्थान पर जो भावनाएं व्यक्त की गई हैं मैं अपने आपको उन सब से सम्बद्ध करने के लिये खड़ा हुआ हूं। उत्तर प्रदेश के मुख्य मंत्री होने से भी मेरे नजदीक यह चीज़ बढ़कर है कि वे मेरे मित्र रहे हैं। किसी जातिगत मामले के विषय में अथवा अपने स्कूलों से सम्बद्ध किसी बात के लिए जब-जब भी मुझे पन्त जी से मिलने का अवसर मिला है, उन्होंने कभी भी ऐसा नहीं किया कि मेरी बात को सुने बिना मुझे टाल दिया हो और मेरी जाति के लिये कुछ न किया हो। मैं उस समय को नहीं भूलूंगा जब कि बोर्ड ऑफ हाई स्कूल ऐंड इंटरमीडियेट ने अपनी अंग्रेजी की परीक्षा में ऐंग्लो इंडियन स्कूलों के विद्यार्थियों को लेने से इनकार कर दिया था। मैं पन्त जी के पास गया। उनके पास जाने के पहिले मुझे यह पूर्ण आशा नहीं थी कि कार्य हो जायेगा। किन्तु पन्त जी ने केवल ऐंग्लो इंडियन जाति के लिए ही नहीं बल्कि ऐसे हर एक बच्चे के लिए, जो किसी ऐंग्लो इंडियन स्कूल से निकला था, इसको कर दिया। मुख्य मंत्री होने से भी बढ़कर, मेरी जाति के लिए तो पन्त जी मित्र रहे हैं। मेरी जाति की यह आकांक्षा है कि भगवान पन्त जी को दीर्घजीवी करे और उनको दिल्ली जाकर जो कार्यभार उठाना है, उसकी पूर्ति के लिये उन्हें सद्बुद्धि तथा साहस दे। हम जानते हैं कि पंडित नेहरू अकेले हैं और पंडित पन्त उनकी ठोस सहायता करेंगे। हम सब लोग प्रार्थना करते हैं कि ईश्वर पन्त जी को स्वास्थ्य तथा शक्ति दे।)

*श्री रामप्रसाद देशमुख (जिला अलीगढ़)--माननीय अध्यक्ष महोदय, आज हाउस में हमारे बुजुर्गों ने और साथियों ने पन्त जी की विदाई के अवसर पर विचार प्रकट किये उनको सुनकर, यह जान करके कि आज पन्त जी हमसे जुदा हो रहे हैं, अफसोस तो होता है, लेकिन साथ साथ इस बात के लिये हमें खुशी होती है कि वह उस अधूरे काम को पूरा करने के लिये जा रहे हैं जिसे पूज्य पटेल जी छोड़ गये हैं, उनको वह करके पूरा करेंगे। सन् १९४७ में जब कांग्रेस मिनिस्ट्री आयी, तो पन्त जी ने सोशल डिसएबिलिटी रिमूवल ऐक्ट पास किया, जिसकी वजह से उत्तर प्रदेश के हरिजनों को यह गौरव प्राप्त हुआ कि आज अपने अधिकारों के लिये उन्होंने मांग की और आज अछूतों के अन्दर यह बात पैदा हो गई है कि पन्त जी के होते हुए हमको एक तरह से पूर्ण स्वतन्त्रता है, हर जगह जा सकते हैं और हमको घमण्ड था कि हमारे ऊपर एक बुजुर्ग हमारे पन्त जी बैठे हुए हैं। हम किसी बात के कहने में कोई हिचकिचाहट नहीं रखते थे और कहते थे कि आज हमारे प्रदेश में नहीं, बल्कि हिन्दुस्तान में इस बात की जरूरत है। जैसा महात्मा गांधी जी का उसूल था, वह कहते थे कि मुझे दो काम करने हैं, एक तो स्वतन्त्रता प्राप्ति करनी है और दूसरे अछूतपन दूर करना है। पन्त जी ने उसको पूरा किया, जो एक कोढ़ की बीमारी थी, उसको दूर किया। पटेल जी जब थे उन्होंने एक काम तो यह किया कि उन्होंने रजवाड़ों को समाप्त किया और हमारे पूज्य पन्त जी ने यहां पर जमींदारी को, जो कि अछूतों पर अत्याचार करते थे, उसे समाप्त किया। मैं तो आशा करूंगा कि पन्त जी वहां जाकर सारे हिन्दुस्तान के अन्दर से छुआछूत को भगायेंगे, यह एक सराहनीय काम होगा। मैं तो हरिजनों की तरफ से कहूंगा कि आज हमको जो वर्दान मिला है उसी तरह से हिन्दुस्तान के ९, १० करोड़ अछूत जो हैं उनके ऊपर एहसान होगा और हमको भी इस बात का गर्व होगा कि हमारे उत्तर प्रदेश के एक बड़े नेता ने जा करके हरिजनों के लिये एक बड़ा काम किया। इन शब्दों के साथ मैं पन्त जी को विदाई पर बधाई दूं या मैं यह कहूं कि इस बात को खुशी मनायें कि पन्त जी वहां जाकर एक बड़ा काम करेंगे, जिससे तमाम हिन्दुस्तान के अछूत इस बात को देखेंगे कि उत्तर प्रदेश के एक नेता ने बड़ा काम किया जो कि हमें हमेशा के लिये याद रहेगा।

*श्री सुल्तान आलम खां (जिला फर्रुखाबाद)--जनाब स्पीकर साहब, पन्त जी के लिये हमारे सब के दिल में जो मुहब्बत थी, चाहे वे इस तरफ के बैठने वाले हों या

---

* वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

[श्री सुल्तान आलम खां]

इस तरफ के, अगर किसी सबूत की जरूरत थी तो वह सबूत आज हमें मिल गया। जिस मुहब्बत के साथ और जिस अकीदत के साथ आज यह सदन उनको विदा कर रहा है शायद इसकी तारीख मुश्किल से मिल सकेगी। और क्यों न हो, इसलिये कि हम एक ऐसे नेता से अपने को आज जुदा कर रहे हैं जो खुद आप अपनी नजीर है। पंत जी के आज यहां से जाने से जितना हमारे इस प्रदेश को नुकसान है उतना ही केंद्र को नफा है। हम सब यह भी जानते हैं कि इस मुल्क के अन्दर जब से कांग्रेस गवर्नमेंट कायम हुई, उस वक्त से पंत जी हमारे नेता रहे हैं। मुझे खुद जाती तौर पर इस बात का एहसास है। मैं सन् १९३७ में जब पहली मर्तबा इस सदन में आया और सदन के अन्दर जब आंखें खोलीं तो मुझे इस जगह पर सिवाय पंत जी के और दूसरे को देखने का मौका नहीं मिला। पर मुझे जाती तौर पर इस तमाम दौरान में उस तरफ भी बैठने का मौका मिला और इस तरफ भी बैठने का मौका मिला। मैंने जाती तौर पर कुछ वह लुत्फ भी उठाया जो कि अपोजीशन के लोग उठाते हैं और मुझे वह प्रिविलेज भी हासिल हुआ जो कि ट्रेजरी बेंचेज पर बैठने की सूरत में एक मेम्बर को हासिल होते हैं। लेकिन मैं अपने दोनों तजुरबों की बिना पर कह सकता हूं कि माननीय पंत जी जैसा लीडर और जैसा नेता शायद इस मुल्क में कोई दूसरा नहीं है। हमने यह भी देखा कि मुल्क के अन्दर बहुत से प्रदेशों में हुकूमतें बनीं और उन हुकूमतों में जवाल भी आया, वहां कुछ हवा के झोंके भी आये, कुछ भूचाल भी आये, लेकिन माननीय पंत जी की यह काबिलियत थी कि हमारे सूबे ने एक ऐसी स्टेबिल गवर्नमेंट देखी कि जिसकी नजीर न सिर्फ दूसरे प्रदेशों में बल्कि और दूसरी जगहों में भी मिलना मुश्किल है। वह हमारे सब के लिये एक फ्रेंड भी थे और एक गाइड भी थे और एक फिलास्फर भी थे। उन्होंने जिस तरीके से इस सूबे की खिदमत की वह आप अपनी एक नजीर है। अगर हम आज यह बात कहें तो कुछ गलत नहीं होगा, न सिर्फ गलत न होगा बल्कि उसमें कुछ मुबालिगा भी नहीं होगा कि आज का यह प्रदेश आज का यह सूबा भी पंत जी का एक क्रियेशन है। मैं जानता हूं हम सब इस बात को महसूस करते हैं कि आज वह हमसे जुदा होकर दिल्ली जा रहे हैं और हमारी दुआयें उनके साथ जाती हैं। हमें यह भी यकीन है कि दिल्ली जाने के बाद भी वह अपने इस पुराने सूबे को याद रखेंगे। इसके लोगों की जो मुहब्बत उनके साथ जायगी, उसका वह हमेशा ख्याल रखेंगे। उनके जाने का हमें दुख और मलाल है, लेकिन हमें इस बात का इत्मीनान और सकून जरूर है कि यहां बैठकर जिस तरह से वह हम सबको गाइड करते थे, उसी तरीके से अब भी वह हमारे सूबे की दस्तगीरी करते रहेंगे। वह अब भी हमारे नेता रहेंगे और तमाम मुल्क के नेता बनेंगे। साथ ही दूसरों को वह इस बात का मौका देंगे कि जिस तरीके पर उन्होंने हमें गाइड किया उसी तरीके पर दूसरे लोगों को भी इसका मौका मिलेगा। इन शब्दों के साथ मैं दुआ करता हूं कि पन्त जी दिल्ली जांय, खुश रहें, तन्दुरुस्त रहें, खुदा उनको बहुत अच्छी सेहत दे और एक लम्बी जिन्दगी दे ताकि वह इस सूबे के साथ साथ मुल्क के अन्दर पूरी काबलियत से, अपनी पूरी मेहनत से पूरी कायमयाबी के साथ आगे बढ़ें और मुल्क को ऐसी कामयाबी दिलायें जिससे कि मुल्क न सिर्फ इस जमाने में बल्कि आने वाले जमाने में भी एक बहुत बड़ा ऊंचा मुकाम हासिल कर सके।

*श्री कन्हैया लाल वाल्मीकि (जिला हरदोई)—माननीय अध्यक्ष महोदय, आज का जो दिन है इसको मैं बड़ी खुशी का दिन कहूं या रंज का, यह मैं बड़ी देर से अपने साथियों के कुछ भाषण को सुनते हुए, यही फैसला कर रहा था। हमारे माननीय देशमुख जी ने अभी हरिजनों के विषय यह बतलाते हुए कि माननीय पन्त जी की छत्रछाया में हरिजनोत्थान हमारे उत्तर प्रदेश में कितना हुआ इसका कुछ वर्णन किया। जब भी कभी पन्त जी के निकट बैठ कर हरिजनों की समस्याओं पर विचार करने या कुछ बतालाने का अवसर मुझे मिला है, मैंने देखा कि मुझसे ज्यादा कहीं माननीय पन्त जी के हृदय में हरिजनोत्थान की भावनाएं थीं और जहां मैं कुछ बतलाने गया था,

*वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

कुछ सुझाव देने गया था, वहां मैं कुछ उनसे सीख कर आया कि मुझे इतना ही नहीं इससे ज्यादा हरिजनोत्थान में कुछ सोचना चाहिए। अध्यक्ष महोदय, मैं आज निवेदन करूं कि हरिजनों में अधिक पिछड़ी हुई मेहतर जाति के सिलसिले में जब कभी भी मैंने कोई बात माननीय पन्त जी के सम्मुख रखी, पन्त जो ने उस बात को सुन कर इससे अधिक मलाल जाहिर किया। मैं चाहता हूं कि इस देश में जब राम राज्य या स्वर्गीय बापू जी का स्वप्न पूरा होगा, जब कि देश की यह सबसे पददलित मेहतर जाति का उत्थान होगा और उनके काम करने के जो तरीके हैं, जैसे कि सर पर मैला उठाना आदि। यह तरीके वैज्ञानिक ढंग से परिवर्तित हो जायं और इस सबसे पिछड़ी मेहतर जाति का इतना उत्थान हो जाय कि लोग इससे घृणा करना भूल जायं, जिस प्रकार से कि देश के डाक्टर जो गन्दे से गन्दा काम मलमूत्र आदि हाथ से छूकर करते हैं और इतनी सफाई से रहते हैं कि उनसे उनकी बिरादरी के तथा अन्य कोई लोग उनसे तनिक भी घृणा नहीं करते हैं। इसी प्रकार से जब कभी मैं कोई समस्या लेकर उनके पास गया तो हमेशा उन्होंने यही कहा कि इस समाज के लिये मैं चाहता हूं कि देश का उत्थान तब होगा जब कि इस देश की सबसे गिरी हुई और पिछड़ी जाति भंगी तथा मेहतरों का इतना उत्थान हो जाय कि जिस तरह से आज डाक्टर वगैरह से कोई छूत नहीं की जाती है उसी तरह से इनसे भी न की जाय और कई ऐसे तरीके अमल में भी लाये गये।

इसी तरह से हमारे हृदय में ज्वार भाटा आ रहा है और मैं नहीं समझ पा रहा हूं कि मैं इसमें किस ओर बह रहा हूं? हमें आज इतना दुख है कि उसे बरदाश्त करने में हम परेशानी में पड़ रहे हैं। लेकिन कुछ साथियों ने जो यह शब्द कहे कि माननीय पन्त जी के देहली जाने से न जाने इस प्रदेश में क्या हो जाय मैं समझता हूं कि उन्होंने प्रेम की भावना में बहते हुए अपने मुखारबिन्दु से यह शब्द निकाल दिये।

मैं समझता हूं कि हमारे पंत जी के साथ बैठकर हमारे साथियों ने और उनके संसर्ग में रह कर माननीय सम्पूर्णानन्द जी ने जो कुछ सीखा है उससे हमें पूरा विश्वास है और अन्य मंत्रियों से भी पूरा विश्वास है कि पंत जी के देहली जाने के पश्चात् भी किसी प्रकार की अशांति स्वप्न में भी नहीं आयेगी। बल्कि हम यह कहेंगे कि जो हमारी समस्यायें हैं उनको अधिक योग्यता के साथ सुलझाने का और कार्य करने का उनको मौका मिलेगा और प्रदेश को आगे बढ़ाने का मौका मिलेगा। इस प्रकार का हमें पूरा विश्वास है।

मैं समस्त हरिजनों की ओर से प्रार्थना करूंगा कि ईश्वर पंत जी को अधिक बल और अधिक जीवन दे ताकि वह जिस प्रकार से यहां का कार्य चलाते रहे उसी प्रकार से वहां भी कार्य करते रहें। इस मलाल को, जैसा कि शायर ने कहा है "सोचकर मैं सब्र करूंगा।" माननीय सम्पूर्णानन्द जी को आज यह पद प्राप्त हो रहा है और माननीय पंत जी जा रहे हैं। जिस बुराई का अंजाम खुशी हो वह खुशी भी बुरी है और जिसका अन्जाम भला हो वह मलाल भी अच्छा है।

श्री रामनरेश शुक्ल (जिला प्रतापगढ़)—माननीय अध्यक्ष महोदय, प्रजातांत्रिक प्रणाली पर इस देश में राज्य की स्थापना हुई और इन १७ वर्षों में इस भारतवर्ष के और प्रांतों में कितने ही मुख्य मंत्री बने, आये और गये, लेकिन जिस प्रकार से आज उत्तर प्रदेश के विशेष प्रतिनिधि के रूप में यहां और सदन के बाहर सवा छै करोड़ जनता माननीय पंत जी को बिदाई दे रही है, यह इतिहास में एक नई और अनोखी चीज है।

माननीय अध्यक्ष महोदय, जब मैं सोचता हूं कि इतनी बड़ी कसक, इतनी बड़ी तकलीफ और इस प्रकार की चिन्ता इस प्रांत विशेष को क्यों हो रही है तो मस्तक में यह बात आती है कि यह संभवतः इसलिये है क्योंकि माननीय पंत जी बहुत निपुण शासक हैं। कभी-कभी बात ख्याल में आती है कि संभवतः यह बात हो सकती है कि माननीय पंत जी ने इस प्रांत को बनाया है, उसके निर्माता हैं। कभी-कभी माननीय अध्यक्ष महोदय, यह भी ख्याल आता है कि शायद इसलिये है कि माननीय पंत जी इस देश को गरीबी से अमीरी की तरफ ले गये हैं। लेकिन माननीय अध्यक्ष महोदय, यह कारण अपनी जगह पर हो सकते हैं। परन्तु मुख्य कारण जो मैं

[श्री रामनरेश शुक्ल]

समझता हूं वह यह है कि आज पंत जी का व्यक्तित्व उनके शासन और निर्माता होने तक ही सीमित नहीं रहा। लेकिन वह एक महामानव के स्वरूप में हमारे प्रांत में विद्यमान रहे हैं। माननीय अध्यक्ष महोदय, यह सच है कि मुझे उनके निकट रहने का जितना सौभाग्य प्राप्त हुआ है मैंने देखा, जैसा कि मेरे एक मित्र ने कहा कि २४ घंटे में कोई ऐसा समय नहीं था जब कि गरीबों के लिये उनका दरवाजा नहीं खुला रहा हो। प्रांत के कोने-कोने से छोटे से छोटा कांग्रेस का सेवक या जनसेवक इस भावना को लेकर चलता था, यदि उसको कोई दुख या शिकायत होती थी कि मैं पत जी के यहां जा रहा हूं। एक किसान को जब गांव में कोई परेशान करता था, सताता था तो वह बड़ी शान से कहता था और इस हिम्मत को लेकर कहता था कि मैं पंत जी के यहां जा रहा हूं। माननीय अध्यक्ष महोदय, मैंने इतने दिनों में नहीं देखा और सुना भी नहीं कि शायद किसी भी मुख्य मंत्री के दरवाजे, किसी भी इतने बड़े शासक का दरवाजा इतने छोटे-छोटे व्यक्तियों के लिये सदैव खुला रहता हो और खुला रहता है उसी दर्द और तकलीफ के साथ जिसको पाकर वह किसान अपने घर में अपने घावों को कुछ पूरा पाकर लौटता था। आज वह महामानव इस प्रांत से दिल्ली जा रहे हैं। आज यह जो एक नयी चीज इतिहास के पन्नों में लिखी जा रही है कि सारा प्रांत, अपने साथी तो साथी रहे, जो विरोधी भी रहे, या जो दूसरे तरीके से सोचते रहे हों उनको भी आज आपके जाने का रंज है। वह इसलिये है कि हमारी भारतीय परम्परा के ही ढंग से उन्होंने शासन किया है। हमारी भारतीय परम्परा में शासक कभी भी शासक के रूप में प्रजा के सम्मुख नहीं आया है। पुराने समय में भी जब राजतंत्र था या उसके बाद जब आगे बढ़े तो जब कि इस सरकार को जनता ने दूसरा ही रूप दिया है, या तो वह समाज के अगुआ रहे हैं या देश के सबसे बड़े चिन्तक रहे हैं, और पिछले दिनों में ईश्वर के अंश भी माने गये हैं। माननीय पंत जी इस प्रांत की जो आधुनिक परिभाषा है, शासक और शासन करने की उसके बहुत ऊपर गये हैं। उन्होंने इस सारे प्रांत को एक बड़े कुटुम्ब का रूप प्रदान किया। उन्होंने इस प्रांत में जिसमें सवा छै करोड़ वासी हैं उनको अपने बच्चों की तरह कुटुम्ब में शामिल करके स्वयं पिता के तुल्य उनको संचालन किया है। मैंने इन तीन वर्षों में प्रयत्न किया, मैं अपनी कमजोरी बताता हूं। हर समय मैंने जानने की कोशिश की कि मैं उनको एक क्षण के लिये भी क्रोधित देख लूं। लेकिन तीन वर्षों तक प्रयत्न करता रहा और आज मैं अपनी असफलता मानता हूं कि तीन वर्षों में एक क्षण भी मैंने उनको क्रोधित नहीं पाया। माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं आपसे क्या कहूं? यह सच है अपनी जगह पर कि दिल्ली को फायदा है, यह भी सच है कि देश को फायदा है। लेकिन न जाने क्या बात है कि आज हमारा दिल बोझिल सा है। यह हो सकता है कि चलते समय कोई ऐसी बात नहीं होनी चाहिये जो हमें नहीं करनी चाहिये लेकिन अपनी जगह पर यह सच है कि आज हमारा दिल बोझिल है, आंखों में पानी है और ओठों में मुस्कराहट, यदि वह मांगते हैं तो दे सकते हैं। क्योंकि ऐसे समय में और कुछ नहीं कहना चाहता। पिछले समय में जो दशा व्रज की थी भगवान कृष्ण के जाने के समय आज मैं जानता हूं कि वही दशा उत्तर प्रदेश की हो गई है। इसलिये मैं कहता हूं कि आप चाहे दिल्ली जाइये और चाहे किसी और प्रांत में लेकिन आप जितनी दूर भी जायेंगे उतने ही निकट आ जायेंगे। सूरदास जी ने लिखा है:—

जैसे जैसे दूर जाते मन मोहन।
वैसे वैसे धसे जात मन मुकुर हमारे में।

जैसे-जैसे आप दूर जायेंगे वैसे-वैसे निकट रहेंगे। यह उत्तर प्रदेश आपका है, रहा है, आज भी है और आगे भी रहेगा। इन शब्दों के साथ मैं आपको अभिनन्दन करता हूं।

*श्री हरिसिंह (जिला मेरठ)—माननीय अध्यक्ष महोदय, आज पूज्य पंत जी की विदायगी के लिये मैं कुछ शब्द कह देना चाहता हूं और वह यह कि भारत का इतिहास यह बतलाता

---

*वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

है कि इस पृथ्वी पर जो भी शक्तिशाली पुरुष हुआ उन्होंने सदैव जनता के मन को अपनी ओर आकर्षित करके मोह लिया और जब जनता उनकी ओर अधिक लालायित हुई तभी वे उसे व्याकुल छोड़ कर चले गये हैं। इसी तरह, उदाहरणार्थ, श्रीकृष्ण जी की वह कहानी याद आती है जिस समय उन्होंने ग्वालों को अपने साथ लिया और उनको अपने प्रेम के वशीभूत कर लिया तो उनकी एक ऐसी फौज बनी जो सदैव उनके साथ रही और जब उन्होंने जनता के मन को मोहने की बात सोची तो उन्होंने जब वर्षा अधिक हुई और जनता व्याकुल हो गई तो उन्होंने गोवर्द्धन को उठा लिया और उन्होंने जनता की रक्षा की। इसी तरह से जब कालीदह में काली नाग से जनता विक्षुब्ध थी और पानी न मिलने की वजह से परेशान हो जाती थी तो उन्होंने यह सोचा कि इस नाग को खत्म किया जाय ताकि जनता पानी पी सके। उन्होंने उसे नाथा। उसी तरह से पंत जी ने हरिजनों के प्रति जो विषमय वातावरण फैला हुआ था उसे नथ कर दूर किया और जिस प्रकार उस समय ग्वाले कृष्ण जी की ओर मोहित हो गये थे और बगैर उनके रह नहीं सकते थे तभी कृष्ण जी को उन्हें छोड़ कर इन्द्रप्रस्थ जाना पड़ा, उसी प्रकार आज हम हरिजनों को छोड़कर पंत जी इन्द्रप्रस्थ को प्रस्थान कर रहे हैं और इसके लिये मुझे हर्ष है कि हम चाहते हैं कि भगवान आपको १०० गुनी शक्ति दे, आप सारे देश का कल्याण कर सकें, इन्द्रप्रस्थ का कल्याण कर सकें जिस प्रकार कि भगवान कृष्ण ने इन्द्रप्रस्थ को लाभ पहुंचाया था और आपको भगवान इतनी शक्ति दे कि सारे भारत के हरिजनों का कल्याण दृढ़ता के साथ कर सकें।

श्री मुहम्मद अब्दुल लतीफ (जिला बिजनौर)--मोहतरिम स्पीकर साहब, जिस रोज से पंत जी के सिलसिले में यह मालूम हुआ कि वह सेंटर में तशरीफ ले जा रहे हैं उनकी जिन्दगी के बारे में मुखतलिफ मुकामात पर और मुखतलिफ पार्टीज में तकरीरें हुई हैं। मैं यह सोचता था कि उन तकरीरों से इसमें कुछ तजाबुज तो नहीं है लेकिन हकीकत यह है कि इंसान की चन्द खसूसियत होती हैं, उसके अन्दर कुछ चन्द खूबियां होती है और वे खूबियां ही ऐसी होती हैं कि इंसान जो अवामुन्नास के अन्दर हरदिल अजीजी पाना चाहता है वह आज पंत जी को हरदिल अजीजी हासिल है। यह तो एक इम्तिहान की चीज है और हैरतअंगेज चीज यह है कि मैं यहां पर दारुलशफा में रहता हूं और इसके बारे में मुताद्दित लोगों से बात हुई तो मैंने उस खुदाई बात को देखा जो कि बड़ी मुश्किल से एक आदमजात में पैदा हुआ करती है। मैं इस जिन्दगी के गोशे से कुछ दूर रहा यानी इस असेम्बली की इन चीजों से बिलकुल अलग सा रहा लेकिन पंत जी के जिन्दगी के दूसरे गोशे हमारे सामने रहे। करीब ३०, ३५ साल से जंगे आजादी में एक सिपाही की तरह लड़े हैं। यह तो कोई चीज नहीं है सिर्फ महाज की तबदीली है कि वह उत्तर प्रदेश से सेंट्रल गवर्नमेंट में जायं। लेकिन हकीकत यह है कि ऐसे लोगों का वजूद दुनिया में बहुत कम हुआ करता है। इसके औकात होते हैं। जब कभी कौम पर बरबादी आती है तो इस तरह के पुरुष पैदा हुआ करते हैं, इंसान पैदा हुआ करते हैं। इसी तरह से गांधी जी हिन्दुस्तान में पैदा हुये और गांधी जी ने एक उसी तरह की जमात इस हिन्दुस्तान में पैदा की जिसने दुनिया में तहलका मचा दिया और जिसने हैरत में डाल दिया। लेकिन कुदरत इंसान को पैदा करती है और वह रिफार्मर की शक्ल में पैदा करती है और वह मुल्क को कौम को उठाकर ले जाती है। यह पंत जी उन गांधी जी के नवरत्नों में से एक हैं। आज पंत जी यू० पी० के लिये ही नहीं बल्कि सारे हिन्दुस्तान की खिदमत करने जा रहे हैं यह काबिले फ़ख्र है और यू० पी० के अन्दर पंत जी ने जिस तरह से हुकूमत को चलाया है वह भी बहुत हैरतअंगेज है। यहां पर काफी मुसीबत पैदा हो गयी थी लेकिन उन मुश्किलों पर कामयाबी हांसिल की। जब गांधी जी के चारों तरफ मोतीलाल, मौलाना आजाद, पंत जी, वगैरा होते थे तो वह एक पूरी जमात उनके चारों तरफ होती थी जो कि हड्डियों का एक मुजस्सिमा था। जितने भी मसले होते थे तो तपाक से उनको हल कर दिया करते थे, इस चीज को हमने देखा। पंत जी के अन्दर भी यही खसूसियत है। आप देखिये कि हर गोशे से चाहे वह अपोजीशन में हो या दूसरी तरफ हो लेकिन सब तरफ से एक ही आवाज उठायी गयी कि पंत जी के अन्दर खूबी है और वह खूबी वह है जो कि तजकिरा से बालातर है। आज पंत जी की यहां से रुखसती हो रही है और रुखसती हिन्दुस्तान की खिदमत करने के लिये हो रही है। इस

[श्री मुहम्मद अब्दुल लतीफ]

खुशनसीब मौके पर हम उनके लिये यही दुआ कर सकते हैं कि खुदा उनको पूरी तन्दुरुस्ती अता फरमाये और देश की तरक्की करने के लिये खुदा उनको मुद्दत तक जिन्दा रखे।

श्री ब्रजविहारी मिश्र (जिला आजमगढ़)—माननीय अध्यक्ष महोदय, आज जिस विशिष्ट व्यक्ति को विदा देने के लिये हम यहां पर खड़े हुये हैं उनका हमारी राजनीति में सर्व प्रमुख स्थान रहा है। माननीय अध्यक्ष महोदय, श्रद्धेय पंत जी का स्थान केवल राजनीति में ही सीमित नहीं था बल्कि हर दिशा में जिस तरफ भी हम जायें वह अपना स्थान रखते थे और इस सदन का प्रत्येक सदस्य जो भाव उनके लिये रखता है, और जिसको हम सब ने सुना है वह यथार्थ में सत्य है। अपनी बहुमुखी प्रतिभा और हृदय और मस्तिष्क के गुणों के कारण आज प्रदेश के प्रत्येक नर नारी के हृदय में उन्होंने घर कर लिया है। माननीय अध्यक्ष महोदय, आपके द्वारा मैं यह व्यक्त करना चाहता हूं कि आज प्रदेश में उनकी यहां से विदाई के अवसर पर हर एक व्यक्ति, चाहे वह किसी समुदाय या दल का हो, इस बात को अनुभव कर रहा है कि उनके यहां से जाने से इस प्रदेश को हानि हो रही है। इस सदन के हर एक सम्मानित सदस्य का यह भाव है और इस सदन के सदस्य ही नहीं बल्कि इस भवन की भूमि भी जो माननीय पंत जी के स्पर्श से पवित्र और अनुप्राणित हो चुकी है इस विछोह से क्षुब्ध हो रहीं होंगी। परन्तु यह विछोह राष्ट्र के हित में हो रहा है। माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं यह महसूस करता हूं कि आज देश और राष्ट्र के हित के लिये हमारे इस सदन को यह सहन करने के लिये प्रस्तुत होना पड़ रहा है और उसमें हमारे प्रदेश की प्रतिष्ठा और देश का हित है। क्योंकि अब वे केन्द्र में जा रहे हैं इसलिये हमारा यह कर्त्तव्य हो जाता है कि हम अपनी शुभ कामनायें उनके साथ भेजें। हम ईश्वर से प्रार्थना करते हैं कि माननीय पंत जी दीर्घजीवी हों और वे बल और शक्ति प्राप्त करें जिससे वे देश का हित और कल्याण कर सकें। इन शब्दों के साथ माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं सूरदास जी के एक दोहे के साथ अपना निवेदन समाप्त करता हूं

"हाथ छुड़ाये जात हौ निबल जानि के मोहि,
हिरदे ते जब जाहुगे मर्द बदौंगों तोहिं।"

*श्री हरिश्चन्द्र वाजपेयी (जिला लखनऊ)—माननीय अध्यक्ष महोदय, श्रद्धेय पंत जी के चरणों के समीप रहने का मुझे सौभाग्य प्राप्त हुआ है। मैंने उनके समीप रह कर उनकी विचार शैली, क्रिया शैली, उनकी रीति, उनकी नीति, उनका तौर-तरीका, उनका ढंग और उनके बरताव को बहुत कुछ अच्छी तरह से देखा है। इन तमाम बातों से हमें गर्व है कि हमें ऐसा सुअवसर प्राप्त हुआ। इतना ही नहीं अध्यक्ष महोदय, मैंने आपको स्वतंत्रता के युद्ध क्षेत्र में लड़ाई लड़ते हुये भी देखा है। इस भवन से दूर नहीं, केवल १०० कदम के फासले पर ही की बात मुझे स्मरण है। १९२८ की बात है, वह वक्त याद आता है जब कि आप वहां खड़े हुये थे और ब्रिटिश सरकार का दमनचक्र बड़ी तेजी से चल रहा था और वे हमको आगे ले जा रहे थे। हम इस बात को भूल नहीं सकते, वह दिन मुझे सदैव याद रहेगा। उधर डंडों का प्रहार हो रहा था और वे आगे बढ़ रहे थे। पंत जी भी जवाहरलाल जी के नेतृत्व में आगे कदम बढ़ाते चले जा रहे थे और ब्रिटिश सरकार के सैनिक घोड़ों पर चक्कर लगाते हुये चारों ओर फिर रहे थे वे हम लोगों पर प्रहार कर रहे थे। श्रद्धेय पंत जी पर उनका प्रहार हुआ। हमने देखा कि उनके ऊपर प्रहार हुआ है लेकिन मैं गर्व के साथ कह सकता हूं कि उन्होंने अपने कदम को पीछे नहीं हटाया और उनके कदम आगे ही बढ़ते गये। इसी प्रकार से आगे भी सदैव उन्होंने स्वतंत्रता संग्राम में आगे कदम बढ़ाया। अध्यक्ष महोदय, मुझे थोड़े से शब्दों में और भी घटनाओं का वर्णन करना है।

मुझे उनके साथ जेल में भी रहने का सौभाग्य प्राप्त हुआ चाहे वह बरेली जेल में हो या फैजाबाद जेल हो। मुझे उस वक्त की भी एक ही बात का स्मरण आ रही है कि वे कभी भी

---

*वक्ता ने भाषण का पुनर्रीक्षण नहीं किया।

अपने हृदय में निराशा को स्थान नहीं देते थे और सदैव ही आशा की झलक ही उनके चेहरे पर दिखाई देती थी। मुझे उनका धैर्य, प्रसन्न वदन, उनकी कार्य क्षमता और सहनशीलता तथा बल घोर यातनाओं के समय भी देखने का अवसर प्राप्त हुआ है। वे सदैव ही यही कहते रहे कि युद्धक्षेत्र में बढ़ते ही चलो कभी न कभी तो भारत स्वतंत्र होगा ही। अध्यक्ष महोदय, जब सन् ३७ में कांग्रेस का उम्मीदवार होकर मैं इस सदन में आया तो हमारे सामने जो गम्भीर प्रश्न उपस्थित थे वे यह थे कि हम तो कांग्रेस के झंडे को लेकर आगे बढ़ने वाले लोग हैं, जेलों की यातना सहने वाले हैं, लड़ना हम भली भांति जानते हैं लेकिन क्या शासन की बागडोर भी अपने हाथ में लेकर आगे भी बढ़ सकेंगे या नहीं।

(इस समय १ बजकर ८ मिनट पर श्री अध्यक्ष के चले जाने पर उपाध्यक्ष श्री हरगोबिन्द पन्त पीठासीन हुये।)

ऐसे समय में इन कठिनाइयों को सम्मुख रखते हुये और इन दिक्कतों को सम्मुख रखते हुये यह ख़याल करते हुये कि क्या हमको शासन चलाने का अनुभव पूर्णरूप से प्राप्त है, क्या महात्मा गांधी के बताये हुये मार्ग पर हम शासन भी चला सकेंगे? क्या हम इस देश में समानता ला सकेंगे? क्या इस देश का आर्थिक बटवारा भी ठीक तरीके से समान रूप से कर सकेंगे? और क्या हम अपने स्वतंत्रता के संग्राम को भी इस भवन में रहते हुये भी आगे चला सकेंगे, ये सब प्रश्न गम्भीरता के साथ हमारे सम्मुख उपस्थित थे। मैं जेल में भी सोचा करता था और जब हम लोग चुन कर आये तब भी हम लोगों ने सोचा कि हम किस तरह से इस शासन को सफल रूप से चलायेंगे और गांधियन सोशलिज्म समाज स्थापित करके हम आगे बढ़ सकेंगे। ये सब प्रश्न भी हमारे सन्मुख गम्भीरता के साथ मौजूद थे। ऐसे गम्भीर अवसर पर हम लोगों ने पंत जी को अपना नेता निर्वाचित किया और निर्वाचित करके यहां के शासन की बागडोर श्रद्धेय पंत जी को सौंप दी और सौंप करके हम गर्व के साथ कह सकते हैं, आज हम अभिमान के साथ कह सकते हैं, आज हम बल के साथ कह सकते हैं, आज हम हर्ष के साथ कह सकते हैं कि जिस तरीके से आपने हमारा नेतृत्व किया है, जिस तरीके से आपने हमें पथ-प्रदर्शन कराया है, जिस तरह से आपने इस प्रदेश को आगे बढ़ाया है, यह एक ऐसी चीज है जिसका कि इस प्रदेश के रहने वाले हर व्यक्ति को गर्व हो सकता है। हमारे सामने उस वक्त बहुत सी जटिल समस्यायें थीं और उन जटिल समस्याओं को उस समानता पर लाने का प्रश्न मुख्य रूप से उपस्थित था। और उस समानता के लाने के प्रश्न पर सबसे पहले पंत जी ने नेतृत्व किया और इस भवन में पंत जी ने बेदखली खतम करके किसानों को आगे बढ़ाया और उनको सभी अधिकार देकर उनके खेतों का स्वामी और मालिक बनाया। और इतना ही नहीं वह पीड़ित व दबा हुआ वर्ग व पिछड़ा हुआ वर्ग और एक वक्त ही भोजन करने वाला किसान जो था उसे यह देख कर कि वह स्वयं खेत का मालिक हुआ सदैव के लिये स्वामी है, उसे भी कुछ जागने का अवसर मिला, उसे भी कुछ आगे बढ़ने का अवसर मिला और उसने भी यह समझा....

(इस समय १ बजकर १२ मिनट पर श्री अध्यक्ष पुनः पीठासीन हुये।)

श्री अध्यक्ष—मैं चाहता हूं कि अभी और भी बहुत ज्यादा लोग बोलने वाले हैं अतः आप बहुत जल्दी खतम करें।

श्री हरिश्चन्द्र वाजपेयी—मैं अधिक समय नहीं लूंगा। तो मैं यह कहना चाहता हूं कि हम लोगों ने जो नेतृत्व पंत जी को सौंपा था उसके लिये हमको गर्व है और हम कह सकते हैं कि आपने अपने प्रदेश का नेतृत्व करके इसको आगे बढ़ाया है। और यहां की जनता की दिक्कतों को हल करने में सब को साहस और बल दिया ताकि एक मुनासिब कदम उठाया जा सके। मुझे यह कहने की आज्ञा दी जाय कि सन् ३९ में जिस समय कि महात्मा गांधी ने आज्ञा दी कि स्वतंत्रता के युद्ध-क्षेत्र में जाना होगा तो भले ही किसी के चेहरे पर निराशा हो, भले ही किसी के चेहरे पर संदेह हो परन्तु आप साहस और प्रसन्नता के साथ सरकारी शासन की बागडोर अपने हाथ से छोड़ कर युद्ध क्षेत्र में जाकर खड़े हो गये। मैं उस अवसर को भी आज अच्छे तरीके से याद रखता हूं। मैं यह भी जानता हूं कि जब

[श्री हरिश्चन्द्र वाजपेयी]

सन् ४६–४७ में हम लोग फिर निर्वाचित होकर आये तो हमारे सामने अनेक जटिल समस्यायें थीं और मुख्य रूप से साम्प्रदायिक समस्यायें हमारे सामने थीं, हिन्दू, मुसलमान और भारतवर्ष के विभाजन के मुख्य प्रश्न मौजूद थे, उस वक्त भी आपका नेतृत्व हमारे ऊपर था और जिस सुन्दरता के साथ आपने उस समय का निर्वाह किया वह बतलाता है कि आपमें समानता की भावना एक उज्ज्वल स्वरूप के साथ मौजूद है। मेरे कहने का तात्पर्य यह है कि आप का १७ साल का नेतृत्व हमको यह दिखलाता है और इस मुल्क को दिखलाता है कि हमको साहस और बल उन्हीं से मिला है, चाहे वह आज भले ही दिल्ली जाते हैं लेकिन उनकी प्रेरणा से हमें वह साहस और बल मिलता रहेगा। मैं समझता हूं कि आपको दिल्ली ले जाने में ग़लती की गई है और मैं ऐसा कहने में संकोच नहीं करता कि आपका जैसा नेतृत्व हमें प्राप्त नहीं हो सकता है और न हम आपके समान अपना नेता बना सकते हैं, मैं तो इसको गलत ही मानता हूं, भूल ही समझता हूं लेकिन आपको विश्वास दिलाना चाहता हूं कि आपके प्रति हमारी श्रद्धा सदैव बनी रहेगी और आपके चरणों में हमारा विश्वास बना रहेगा और हम इसी विश्वास और श्रद्धा को लेकर आगे बढ़ते ही रहेंगे और वह काम जो अब तक समाप्त नहीं हो पाया है उसको पूरा करने का हम प्रयत्न करते रहेंगे।

*राजा बीरेंद्र शाह (जिला जालौन)––माननीय अध्यक्ष महोदय, आज इस भवन में पूज्य पन्त जी के विदाई पर जो भाषण हुये हैं मैं माननीय सदस्यों के उन एक-एक अक्षर से सहमत हूं कि जो उनके बारे में उन्होंने कहे हैं और इस विषय में जितना कहा जाय वह कम है। मैं इसलिये भी इस समय बोलने खड़ा हुआ हूं कि मैंने जबसे सन् ४६ से राजनीति में हिस्सा लिया और यहां आया बराबर मैं विरोधी दल में रहा और मेरी इतनी योग्यता तो नहीं थी लेकिन जो कुछ भी मुझसे बना मैंने उनका विरोध किया। जो आदर आज इस प्रान्त की जनता में और कांग्रेस के अलावा दूसरी पार्टियों के दिलों में उनका है वह इस बात का सबूत है कि वह प्रान्त के कितने महान् व्यक्तियों में से एक माने जाते हैं। मैं यहां यह कहूं कि इस प्रान्त में उन्होंने वह काम किया कि २२ लाख जमींदारों की जमींदारी समाप्त कर दी और जिस व्यवहार से हम मानते हैं, और मैं भी उनमें से ही हूं कि इससे हमको कष्ट हुआ और आर्थिक हानि हुई, परन्तु हमने उसको सहन किया और उसका कारण पन्त जी का सद्व्यवहार, भलमनसाहत और उनका अखलाक था। उन्होंने प्रान्त में अपने भलमनसाहत से और परिश्रम से इतने बड़े कामों को ला एण्ड आर्डर को कायम रख कर किया, जिस तरह से दुनिया के सभ्य लोग करते हैं। मैं एक बात और कहना चाहता हूं कि जिस चीज से लोगों को दुःख भी हुआ और तकलीफ हुई वह काम अभी पूरा नहीं हुआ है और बहुत सी चीजें हैं कि जो अभी उनकी की हुई अधूरी हैं और पूरी नहीं हुई हैं, जैसे अभी तक बांन्ड्स नहीं मिले हैं जिसके कारण लोगों को तकलीफ है और इसलिये हम इस मौके पर आशा करते हैं कि जिन पर माननीय पन्त जी अपना कार्यभार सौंप कर जायंगे उनको बराबर उनकी हिदायत होगी कि जो काम उन्होंने किया है उसको पूरा करने में वही भलमनसाहत बरतेंगे और जो कमी है उसकी पूर्ति करेंगे। वह दिल्ली में भी बैठ कर सलाह देते रहेंगे और हम लोग अगर वहां जायंगे तो महत्वपूर्ण बातों में वह वहां भी हमारी सुनवाई करते रहेंगे। इन शब्दों के साथ मैं उनको हृदय से बधाई देता हूं कि वह इस प्रदेश से भारत सरकार में सम्मिलित होने जा रहे हैं। आशा है कि वह वहां जाकर हमारे देश का नेतृत्व करेंगे।

श्री रणंजय सिंह (जिला सुल्तानपुर)––माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं देख रहा हूं कि प्रत्येक माननीय सदस्य के द्वारा आज यहां पर अभिनन्दन किया जा रहा है, हमारे इस

---

*वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

आदरणीय सदन के नेता महोदय का। मैं भी अपनी ओर से उस अभिनन्दन में सम्मिलित होने के लिये उपस्थित हुआ हूं। माननीय श्री पन्त जी की क्या प्रशंसा की जाय, वह तो सभी के मुख से आज निकल रही है। मैं अपना केवल एक थोड़ा सा अनुभव निवेदन करना चाहता हूं। जब मैंने यहां पर 'गोवंश संरक्षण विधेयक' रखा था और मैं चाहता था कि उसको एक प्रवर समिति को सौंपा जाय तब माननीय पन्त जो ने राजनीतिज्ञता से काम लिया और उन्होंने उसे प्रवर समिति को ही नहीं वरन् उसके लिये इतनी बड़ी समिति बनाई जिसमें सभी विचारों के महानुभाव एम० पी० तक सम्मिलित किये गये और यह उन्हीं की कृपा है कि डा० सर सीताराम के समान योग्य अध्यक्ष रक्खे गये तथा समिति ने इतना अच्छा काम किया है। उसके जो निर्विरोध निर्णय हैं उनके बारे में तो अभी कुछ प्रकट करना नहीं चाहता लेकिन जो कुछ भी हुआ है वह आपके आग्रह के ही कारण, अब जो भी उसका निर्विरोध निर्णय है वह शीघ्र कार्यान्वित होगा यह मुझे पूर्ण आशा है।

हमारे पन्त जी यहां से कहीं अलग जा नहीं रहे हैं बल्कि वे तो एक विशेष व्यापक रूप धारण करने जा रहे हैं। वे केवल इस प्रदेश का ही नहीं सारे देश का नेतृत्व ग्रहण कर रहे हैं। इसलिये इस समय अधिक न कह कर निम्न पंक्तियों में अपनी श्रद्धा अर्पित करता हूं :—

उत्तर प्रदेश में अनेक नेक कार्य कर,
उत्तर दायित्व अब केन्द्र में हैं ले रहे।
जन्म श्रीमन्त पन्त का है अनन्तचौदस का,
नौका अनन्त प्रेम की तभी सदा खे रहे।।
त्याग कर हमें हैं न जाते कहीं आप बस,
व्यापकता में वृद्धि है, दया दिल्ली से रहे।।
होता है वियोग दुःखदायी किन्तु धन्य आप,
फिर भी बदले में सम्पूर्णानन्द दे रहे।।

अन्न मंत्री (श्रीचन्द्रभानु गुप्त)—अध्यक्ष महोदय, इतने भाषणों के बाद और इतनी सुन्दर भाषा में जो भाषण दिये गये हों, मेरे ऐसे व्यक्ति के लिये पूज्य पंत जी के प्रति कुछ श्रद्धा के शब्द कहना एक कठिन कार्य है। इस युग की और इस प्रदेश की राजनीति में जिन पांच व्यक्तियों ने जहां तक इस प्रदेश का सम्बन्ध है जो कार्य किये हैं उनका यदि हम उल्लेख करने लगें तो हमें यह पता चलेगा कि पंडित जवाहरलाल नेहरू ने हमारे देश के नवयुवकों में उमंग और उत्साह प्रदान किया है, राजर्षि टंडन ने त्यागमय जीवन व्यतीत करने के लिये हमें आदर्श प्रदान किया है, आचार्य नरेन्द्रदेव और डाक्टर सम्पूर्णानन्द ने हमें आदर्शवादिता की ओर ले जाने का प्रयत्न किया और श्रद्धेय पन्त जी ने प्रदेश के नवयुवकों में उस आदर्शवादिता को व्यवहारिकता की कसौटी पर रखते हुये उसका संतुलन और समन्वय जो प्राप्त किया है वह इस प्रदेश के राजनीतिक इतिहास में सदैव उल्लेखनीय रहेगा। श्रद्धेय पन्त जी प्रदेश के तटस्थ व्यक्तियों में नहीं रहे वरन् उन विचारकों में रहे हैं जिन्हो ने महज किताबी दुनिया में न रह कर प्रदेश के कार्यों में उसे रखने की चेष्टा की है।

परन्तु उन्होंने अपनी पदशीलता को कार्यान्वित करने का, वास्तविकता का मुकाबला करने, देश के और विदेश के अन्य कार्यों में अपने को लगाने का प्रयत्न किया है, जिन कार्यों ने उनको पग-पग पर मदद ही नहीं पहुंचाई, सहयोग ही नहीं प्रदान किया परन्तु उन्हें ऐसे कार्य और करने के लिये बाध्य किया जिनसे और जिनके द्वारा यह प्रदेश बना और उत्थान के मार्ग पर अग्रसर हुआ। यह प्रदेश पं० गोविंद वल्लभ पंत का ऋणी है। इतिहास के लेखक जब इतिहास लिखने बैठेंगे तो इस व्यक्ति को, इस युग की कृतियों में पं० गोविंद बल्लभ पंत

[श्री चन्द्रभानु गुप्त]

को वह स्थान प्रदान करेंगे जो आधुनिक देशों में वहां के बड़े-बड़े राजनीतिज्ञों को मिला है। पं० गोविंद वल्लभ पंत ने जो कार्य इस प्रदेश में किया और जिस प्रकार अपनी पदशीलता का परिचय दिया उसका उल्लेख और वर्णन करने की इस सदन में मुझे कोई आवश्यकता नहीं है ।

नवयुवक भावुक हुआ करते हैं और भावुकता के वश में किताबों में जो अध्ययन करते हैं उससे प्रभावित हो कर वे अपने विचारों को व्यक्त करने लगते हैं परन्तु उनकी भावुकता और व्यवहारिकता को जब कोई ठोस व्यवहारिक रूप देना होता है तो वह उससे टकरा जाती है । यदि उन भावुक, आदर्शवादियों और पदशील व्यक्तियों को कोई सबक लेना है और यह सीखना है कि राजनीति में किस प्रकार से कार्य करना चाहिये तो उसका उदाहरण पं० गोविंद वल्लभ पंत की जीवनी है। आज उन नवयुवकों को जो आज उन्मत्त हैं, उमंगों से भरे हुये हैं और आज देश में एक नया वातावरण लाना चाहते हैं, देश में समानता की स्थापना करना चाहते हैं पंत जी की जीवनी पर नजर डालनी चाहिये, उन्हें आकर्षित होना चाहिये। पं० गोविंद वल्लभ पंत की शासन कुशलता की तरफ उनका उदाहरण उन्हें अपने सामने रखना चाहिये। उनके जीवन से उन्हें सबक लेना चाहिये। पं० गोविंद वल्लभ पंत ने सादगी का जीवन व्यतीत करके आज प्रदेश के नवयुवकों में जो उमंग पैदा कर दी है वह क्या भुलाई जा सकती है ? उन्होंने त्याग को जीवन में जगह दी है और देश में और प्रदेश में क्या होना चाहिये, देश में और प्रदेश में किस तरह से उन्नति हो सकती है और उसको किस तरह से ठोस जामा पहनाया जा सकता है, इस सब कार्य को उन्होंने अपने जीवन में और इस बुढापे के जीवन में करके दिखला दिया है। यह प्रदेश सदा उनका ऋणी रहेगा और उनके कार्य को कभी भुला नहीं सकेगा।

मैं आज प्रसन्न हूं कि आज वह उस क्षेत्र में काम करने जा रहे हैं कि जहां से वह अपनी कार्य कुशलता द्वारा, अपनी व्यावहारिक नीति द्वारा और अपने कार्यों द्वारा सारे देश का भला कर सकेंगे। आज भी देश के अन्दर ऐसी बातें उभड़ रही हैं और फैल रही हैं जो कदाचित देश की एकता को कुछ ठेस पहुंचायें। आज इस बात की आवश्यकता है कि केन्द्र में बैठ कर एक ऐसा शासक काम करे कि जो देश की एकता को स्थापित करने में सफल हो और ऐसी विचारधारा को फैलाने में मदद पहुंचाये कि जो धारायें हमारे देश में समानता और एकता स्थापित करने में मदद पहुंचा सकती हैं, जो हमारे बीच की गरीबी को मिटा सकती हों, जो हमारे बीच में उन आपत्तियों को दूर कर सकती हों कि जिनका शिकार हमारा देश हो रहा है। इस प्रजातंत्र शासन की स्थापना के बाद जो परम्परायें और मर्यादायें प्रजातंत्र शासन को चलाने के लिये पूज्य पंत जी ने स्थापित की है वह क्या कभी भुलाई जा सकती हैं ? आखिर को जितने प्रजातंत्र देश सफल हुये हैं और आज अपने बीच में कार्य कर रहे हैं उभड़ते हुये दिखलायी दे रहे हैं, वह तमाम पद्धतियों, परम्परायें और मर्यादायें कि जिनकी बुनियाद पर वे ऊंचे उठ पाये हैं, उनकी स्थापना में पूज्य पंत जी ने जो सहायता दी है वह भी, जहां तक राजनीतिक और इतिहास का विषय है, कभी भुलाई नहीं जा सकेगी। वे हमें सदा स्मरण रहेंगी, उन से हम प्रोत्साहन लेते रहेंगे। पंत जी केन्द्र में जा रहे है यह सच है। वह हमारे बीच से दूर हो जायेंगे और हम वह प्रेरणा जो रोजमर्रा के जीवन में, रोज की उलझनों के विषय में पाते रहे हैं, उनसे प्राप्त नहीं कर सकेंगे।कदाचित हम उन्हें प्राप्त न कर सकेंगे। लेकिन जो कुछ कार्य उन्होंने इन वर्षों में इस प्रदेश में किया है और जिस प्रकार देश के नवयुवकों को और हम साथियों को और उधर के साथियों को जिस उमंग का परिचय दिया है और कदाचित् वह प्रेरणा सदैव देते रहेंगे और उसके तहत में हम सब आगे कार्य करते हुए दिखायी देंगे जिससे यह प्रदेश ऊंचा उठे और आगे बढ़े और एकता के सूत्र में बंधे हुए देश के प्रदेशों को बता सके कि यह उत्तर प्रदेश है, वह उत्तर प्रदेश है जिसने पंडित नेहरू को जन्म दिया है, जिसने टंडन जी को पैदा किया है, जिसने हमारे बीच में आचार्य नरेन्द्र देव जी को पैदा किया है, जिसने सम्पूर्णानन्द को पैदा किया है और जिसने पंत जी को पैदा किया है। आज यह गंगा और यमुना का प्रदेश यदि कुछ कर सकता है तो वह तभी सम्भव हो सकता है कि हम ऐसे व्यक्ति

के नेतृत्व से फायदा उठाते हुये और ऐसे व्यक्ति की प्रेरणा से पूरा फायदा उठाते हुये, इसके उत्थान के मार्ग पर चलने का प्रयत्न करें और इस बुढ़ापे में दी हुयी प्रेरणा का पूरा-पूरा फायदा उठायें।

आज पंत जी, जैसा मैंने कहा, हमसे दूर हटने जा रहे हैं, यद्यपि दिल्ली उत्तर प्रदेश से उतनी दूर नहीं है, ताहम उनकी रोज़मर्रा की जो कार्य करने की शैली रही है, हम उससे वंचित हो जायेंगे। उन्होंने, जो प्रजातंत्रीय शासन हैं, बहुत से जो ढंग शासन के चलाने के हैं, उनमें किस तरह से नयी परम्परायें स्थापित करके हम आगे कार्य कर सकते हैं, उनकी स्थापना की है। और वे परम्परायें हमें सदैव प्रोत्साहन प्रदान करती रहेंगी हमें आगे बढ़ने के लिये उत्साहित करती रहेंगी और प्रदेश में रहने वालों में वे उमंग पैदा करेंगी जिस उमंग के पैदा करने की आज भी आवश्यकता है और कल भी होगी जब तक यह प्रदेश अपनी उन तमाम अवस्थाओं से आगे बढ़ते हुये जिनमें वह अब तक फंसा रहा है, अपने को आगे उठा न सके। मैं अधिक और न कहते हुए इतना ही कहना चाहता हूं कि पंत जी ने जो हमारे समक्ष राजनीतिक जीवन में, सार्वजनिक जीवन में उदाहरण उपस्थित किये हैं वे उदाहरण अनुकरणीय हैं, सभी व्यावहारिक हैं और उदाहरण हमें कभी उनसे दूर नहीं रख सकेंगे। यद्यपि वे दिल्ली में रहेंगे लेकिन उनका दिल लखनऊ में रहेगा, उत्तर प्रदेश में रहेगा और वह दिल हमें सदैव प्रेरणा आगे उन्नति के मार्ग पर चलने के लिये देता रहेगा। मैं इन शब्दों के साथ उनके प्रति अपना आदर सत्कार प्रदर्शित करता हुआ यह आशा रखता हूं कि दिल्ली में रहते हुये वे हमारे सहयोगी बनेंगे और हमें उसी उत्साह और उमंग का परिचय देते रहेंगे जिसकी तहत में उन्होंने अभी तक बहुतों को रखा है और जिसकी तहत में अपना नेतृत्व देते हुये सार्वजनिक जीवन में स्थान प्रदान किया।

श्री राजनारायण (ज़िला बनारस)--माननीय अध्यक्ष महोदय "जेहि आये सुख होत है, तेहि बिछड़त दुख होत" इसमें कोई शक नहीं है कि माननीय पंत जी की महत्ता और उनकी सर्वप्रियता और उनकी कर्मठता और उनकी कार्यशीलता सराहनीय है। जहां तक मेरा अपना निजी सम्बन्ध है मैं इधर अपने कुछ कार्यों के भार में इधर-उधर जाता रहा, पंत जी के किसी विदाई के भोज में भी सम्मिलित न हो पाया। इधर भी दिल्ली गया। आज कानपुर में आया तो एकाएक मालूम हुआ कि आज असेम्बली के कार्य-क्रम में पंत जी की विदायी है। बहुत परेशान हुआ कि पहुंच भी जाऊंगा या नहीं, संयोगवश ट्रेन भी लेट हुई। सीधे दौड़ा हुआ चला आया कि जब पंत जी ऐसे अवसर पर हमारे प्रांत को छोड़कर जा रहे हैं तो मैं भी अपने कुछ भावों को सदन में व्यक्त करूं। श्रीमन्, मैंने पहले ही एक पद में अपने भावों को व्यक्त किया कि आज हमारा हृदय इस बात को समझकर कि पंत जी हम से अलग होंगे, दुखी है और दुख इसलिये भी है श्रीमन्, क्योंकि सदन के तमाम सम्मानित सदस्य और आप जानते हैं कि हो सकता है कि माननीय पंत जी को मेरे द्वारा जितना कष्ट हुआ है शायद और किसी दूसरे के द्वारा न हुआ हो। मैं भी अपने को गौरवान्वित समझता था जबकि मैं देखता था कि माननीय पंत जी ऐसे प्रतिभासम्पन्न और अनुभवी व्यक्ति के सामने हमको विरोध करने का अवसर प्राप्त होता रहता है। श्रीमन्, मैं पंत जी के राज्य में जेल जीवन भी काटता था तो बड़े आनन्द से काटता था और मुझे बड़ी प्रसन्नता होती थी कि यदि जेल जीवन ही काटना है तो पंत जी जैसे कुशल और अनुभवी शासक के मातहत उनके कर्मचारियों के मातहत ही जेल काटी जाय। श्रीमन् जहां दुख है पंत जी के जाने का वहां हमें सुख और प्रसन्नता भी है। प्रसन्नता इस बात की है कि जहां पंत जी के अनुभव और ज्ञान, पंत जी की सूक्ष्मदर्शिता एक प्रांत में सीमित थी, वह अब सारे देश को प्राप्त होगी और एक बात का हमें लालच भी है कि पंत जी इतने दिनों तक इतने बड़े प्रांत के एक कुशल शासक रहे हैं अपनी रीति नीति के मुताबिक जब पंत जी केन्द्र में जायेंगे तो प्रांतीय सरकार की क्या दिक्कतें होती हैं, प्रांतीय स्वतंत्रता पर आज सेंटर कितना आघात करता चला जा रहा है, उसका भी पंत जी को अच्छी प्रकार अनुभव है और पंत जी हमारे इस अधिकार की रक्षा वहां भी रहकर करेंगे, इसकी भी हमें

[श्री राजनारायण]

आशा है और हमारी यह भावना है कि जब हमारे पंत जी ऐसे कुशल राजनीतिज्ञ सेंटर में जायं, तो सही माने में वह जनतांत्रिक प्रणाली और पद्धति के कायम करने में आज केन्द्रीय सरकार के जरिये जो कुठाराघात होता रहता है उस पर जरूर कुछ न कुछ रुकावट डालें। इसके बाद श्रीमन्, पंत जी के जाने से जो हमारी प्रसन्नता है, उसको यहीं सीमित रखकर आगे यह जरूर निवेदन करूंगा कि पंत जी वहां रहकर जनतांत्रिक प्रणाली को आगे बढ़ाने के लिये जो भी कदम उठायेंगे हम लोग विधान सभा के सदस्य की हैसियत से और बाहर की हैसियत से पंत जी का साथ देते रहेंगे। पंत जी को हम आश्वासन देंगे कि पंत जी जब सेंटर में जा रहे हैं तो इतना बड़ा विशाल देश है, विभिन्न मत के लोग आयेंगे और विभिन्न शक्तियों से पंत जी को टक्कर लेनी पड़ेगी, उन शक्तियों में कहीं पंत जी अपनी जनतांत्रिक भावना को खो न दें इसलिये मैं इस अवसर पर पंत जी के हाथ को मजबूत करना चाहता हूं और पंत जी को वह साहस दिलाना चाहता हूं कि जहां तक भी हमारी ताकत होगी जनतांत्रिक प्रणाली को प्रतिष्ठित करने के लिये पंत जी सेंटर में जितने भी कदम उठायेंगे, आगे बढ़ाना चाहेंगे, हमारा साथ बराबर पंत जी को प्राप्त होता रहेगा।

श्रीमन्, इसी के साथ साथ मैं चन्द शब्द पंत जी की कुशलता के बारे में भी व्यक्त करना चाहता हूं। इसमें दो रायें नहीं हो सकती हैं कि सदन में और बाहर पंत जी एक महान कुशल राजनीतिक नेता रहे हैं। पंत जी ने प्रधान शासक की हैसियत से इस प्रांत में जितना उलटफेर किया चाहे वह मुआविजे के साथ जमींदारी एबालिशन हो, चाहे वह दस गुना लगान की जबरदस्ती वसूली हो, चाहे विभिन्न प्रकार के टैक्सों का बढ़ाव हो, यदि पंत जी की जगह पर कोई दूसरा रहा होता तो शायद वह जनता के विक्षोभ को इतनी कुशलता के साथ न दबा सकता जितना कि पंत जी ने जनविक्षोभ को जनक्रांति की भावनाओं को अपनी राजनीतिक कुशलता से दबाया, उसके लिये हम पंत जी की एक प्रकार से तारीफ ही करेंगे। आज प्रांत के अन्दर पंत जी ने जो पौधा लगाया, अब जबकि उसके फल के रसास्वादन का अवसर प्राप्त हुआ तो पंत जी इस प्रांत से जा रहे हैं। मुझे खुशी है कि माननीय पंत जी जाते समय एक सुयोग्य व्यक्ति के हाथ में शासन की बागडोर सुपुर्द कर रहे हैं। अब उन लगाये हुये फलों का रसास्वादन आगे आने वाले व्यक्ति किस तरह से करेंगे, यह नहीं कह सकता, भविष्य देखने पर ही कह सकता हूं।

अध्यक्ष महोदय, इन चन्द शब्दों में मैं पंत जी के प्रति अपना आदर व्यक्त करते हुए फिर उनको बधाई और धन्यवाद देते हुये और उनका स्वागत करते हुये एक बार फिर कहना चाहता हूं कि पंत जी जहां भी रहें, जनतांत्रिक भावना और जनतांत्रिक सत्ता के विकेन्द्रीकरण की ओर अग्रसर रहेंगे तो उसमें हमारा पूरा सहयोग उनको प्राप्त रहेगा। उनकी भावनाओं को बल देने में हम तनिक भी पीछे नहीं रहेंगे।

*मुख्य मंत्री (श्री गोविन्द वल्लभ पंत)—अध्यक्ष महोदय, जितने भाषण यहां इस मेरे दिल्ली जाने के सम्बन्ध में आज हुए हैं उनको सुनने के बाद मेरे लिये कोई व्याख्यान देना बड़ा कठिन हो गया है। मैं समझता हूं कि किसी भी व्यक्ति के लिये इतनी उदारता इतना स्नेह किसी भी सदन में नहीं रहा होगा, जितना कि इस सदन के सदस्यों का मेरे लिये रहा और आज प्रदर्शित भी हुआ है। मैं यदि अपने जीवन में और भी किसी तरह से कुछ ऐसे कार्यों के करने में सफल न होता जिनसे कि जनता का वास्तविक हित हो सके तब भी जो कि मेरे प्रति भाव प्रगट किये गये, उनसे मुझे एक शांति या सन्तोष ही नहीं बल्कि भविष्य के लिये प्रेरणा मिलनी अनिवार्य है, और मैं उससे प्रोत्साहित हूंगा ही। जो कुछ कहा गया वह तो स्नेह भाव से कहा गया और भावुकता में अत्युक्ति हो ही सकती है। मेरा सम्बन्ध इस सदन से और व्यवस्थापिका सभा से ३० वर्ष से चला आ रहा है। सन् १९२४ में मैंने यहां उत्तर प्रदेश

*वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

की व्यवस्थापिका सभा में पहले पहल आने का अवसर पाया था। तब से बराबर मुझे ऐसे अवसरों को छोड़कर जबकि स्वतंत्रता संग्राम के निमित्त दूसरे कामों में मुझे लगाया गया हो, या कि मैं केन्द्र में यहां की व्यवस्थापिका सभा के कार्य करने में कोई सुविधा न मिलने के कारण या उसके बन्द रहन से, न रहा हो, यहां रहने का अवसर निरन्तर रहा है। सन् १९२४ में मैं यहां विरोधी दल का नेता हुआ था और उसके बाद कई वर्षों तक मैं उस अपने कर्त्तव्य को करता रहा उसके पश्चात् फिर जब पहले यहां शासन जनता के प्रतिनिधियों के हाथ में बहुत हद तक आया तब १९३७ से १९३९ तक रहा। उसके बाद फिर हमारे संग्राम ने दूसरा रास्ता पकड़ा और उसके बाद फिर जब यहां हमारा शासन १९४७ में स्थापित हुआ तबसे मैं यहां इस कार्य को सम्पादित करने का यत्न करता आ रहा हूं। बहुत सी स्मृतियां उमड़ती हैं, इन तीस वर्ष के बीच में कितनी बातें हुयीं, कितनी घटनायें व्यवस्थापिका सभा ही में हुयीं जिनका यदि मैं कुछ जिक्र करूं तो बड़ा समय लग जायगा।उस जमाने में जबकि यह हमारे सदन का हाल भी नहीं बना था जब मैं पहले पहल यहां आया था और १९२८ तक हम लोग मैरिस कालेज आफ म्यूजिक के जो पहले कहलाता था और अब भातखंडे विद्यापीठ के नाम से विख्यात है, हाल में बैठा करते थे और वहां हमारा काम चलता था। तब तक कोई हमारा इस तरह का भवन भी नहीं था। उस जमाने में जब विरोधी दल का नेता था, बहुत तरह की बातें होती थीं। अंग्रेज शासक थे और वस्तुतः अंग्रेज ही यहां की ट्रेजरी बेंचेज पर बैठा करते थे और उनसे बातें करना, तर्क करना और कभी कभी उनके साथ जूझने का भी मौका रहता था परन्तु इन सब को करने में भी काफी उस समय रस आता था।

हमेशा हमारा उद्देश्य एक यही रहता था कि जो कुछ हम करें ऐसा हो जिससे हम पूर्ण स्वतंत्रता पाने में किसी तरह से सुविधा प्राप्त कर सकें। इसमें मैं समझता हूं कि जिस हद तक जो कार्यवाही उस समय हुयी थी उससे बहुत फायदा हुआ। उस जमाने के अंग्रेज शासक काफी इस बात की इच्छा रखते थे कि हम लोगों से वह मिलें और बातें करें परन्तु बहुत अवसर ऐसे मिलते नहीं थे फिर भी जो कुछ हमारे आपस के सम्बन्ध थे वह अच्छे थे और उनका हम लोगों के लिये एक आदर भी था और जो बात वह कहते थे वह हम लोगों से जहां तक व्यक्तिगत सम्बन्ध उनसे था उसके लिये उनकी शुभकामनायें सी मालूम होती थीं।

इसके बाद १९३७ में दूसरा अध्याय फिर शुरू हुआ। उसमें बहुत सी बातें हो गयी। नया शासन आरम्भ हुआ यह उससे भी ज्यादा नाजुक बात थी जो पहले की थी, क्योंकि अंग्रेज गवर्नर था और हमारी सभा के कार्य की जो परिधि थी वह सीमित थी और उसके ऊपर बहुत से प्रतिबन्ध थे। हम लोगों का इरादा यह था कि हम प्रतिबन्धों को भी नहीं मानेंगे और परिधि को भी फेंक देंगे। इस तरह से उस समय हमने कार्य किया। कई दफा इस्तीफे दिये। एकदफा मान भी लिया मगर थोड़े दिनों में कहा कि आजाइये। हम आपके इस्तीफे मंजूर नहीं करते और भी इस तरह की बातें हुयीं।

हम काम में उस जमाने में भी उनका और हमारा आपस का प्रतिद्वंदिता या द्वंदता का एक दंगल सा हुआ करता था और उसमें हम हमेशा आगे बढ़ते रहे और उनको हमारी बात माननी पड़ जाती थी उस समय बड़ी नाजुक अवस्था थी और आज की तरह सुविधा नहीं थी। आज तो काफी सुविधा है जो चाहे करो, चाहे गलत करो या सही करो। हमें उस समय अपना कार्य इस तरह से करना होता था कि उनको हमारे खिलाफ कोई तर्क न मिले जो वह जनता के सामने रख सकें कि इन्होंने ज्यादती की, जिससे हमें इनकी बात मानने का मौका नहीं था। दूसरे उनको हमारी बात माननी भी पड़ती थी जो उनके मन के विरुद्ध होती थी। मैं समझता हूं कि वह सब से नाजुक जमाना था जो हमारे काम का था और उस जमाने में बहुत सी ऐसी घटनायें समय-समय पर आती थीं। पर उनसे भी हम पार निकल गये। फिर हमने इस्तीफा दे दिया और चले गये।

सन् ४६ में फिर हमको यहां इस भार को लेना पड़ा और सन् ४७ से हमारा देश स्वतंत्र हो गया तब से सारी जिम्मेदारी हम लोगों पर आगई। उसको भी हमने पूरा करने का

[श्री गोविन्दवल्लभ पन्त]

यत्न किया । मै यह नहीं समझता कि जो कोई अच्छे काम यहां हुए हों उनका श्रेय मुझको है । मै वास्तव में यह समझता हूं और मुझे कभी इस बारे में किसी किस्म की भ्रांति नहीं रही । मै यही समझता रहा कि मैं एक बिल्कुल साधारण सा मनुष्य हूं, कोई मुझे ऐसी विशेषता नहीं है । और मैं समझता हूं कि इस धारणा ने मुझे बड़ी मदद दी और जो कुछ भी अगर काम हुआ है और उसके साथ मेरा भी कुछ सम्बन्ध रहा है तो काम तो औरों ने किया है, सम्पूर्णानन्द जी ने किया, हाफिज जी ने किया, चन्द्रभानु जी ने किया और मेरे साथियों ने किया जहां तक यहां ऊपर की कैबिनेट की बात है और इस प्रदेश के निवासियों ने किया । यदि उनमें वह प्रेरणा न हो, उनमें वह धारणा न हो, उनमें वह सहयोग न हो और उनमें स्वावलम्बन की एक नयी लहर न पैदा हो तो कोई काम वास्तव में नहीं हो सकता । जो कि हमारा रेवेन्यू पहले १२ करोड़ का था जब हमने पहले काम सम्हाला था, वह आज करीब-करीब ८० करोड़ के है । जनता की उदारता के बिना कोई सरकार न काम कर सकती है न पनप सकती है । यदि कोई काम हुआ है तो उसका श्रेय जनता को है । और मैं तो सभी का आभारी हूं । म जमींदारों का बड़ा आभारी हूं, एहसान मानता हूं । हमने उनके साथ काफी सख्ती की और उनको उससे तकलीफ भी हुई, परन्तु उन्होंने देश की सेवा के विचार से उसका कोई ध्यान नहीं किया और जनहित को अपने सामने रखकर जो कष्ट उनको पहुंचा वह उन्होंने सहन किया ।

मैं समझता हूं कि जिस तरीके पर जो भी काम हुये हैं उसका श्रेय हमारी व्यवस्थापिका सभा को है, हमारी कैबिनेट के और सदस्यों को है, मगर सबसे अधिक हमारे देश के निवासियों को है और खासकर जो गांवों में रहने वाले अशिक्षित समझे जाते हैं उनको है और उनके साथ जो शिक्षित समुदाय और नागरिक हैं वे तो हैं ही और उनके अतिरिक्त सरकारी कर्मचारियों को भी है । उनकी टीकाटिप्पणी होती है, होनी ही चाहिये, हमारी भी होती है, पर उन्होंने जब से हमारा देश स्वतंत्र हुआ तब से यथासम्भव हमारी नीति को अपनाया और उसके अनुसार व्यवहार करने का यत्न किया । और उनकी इस बात की अभिलाषा कि हमारे देश से कैसे दुःख दर्द दूर हो । भूख प्यास निकल जाय और सब लोग सुखी हों मुझसे किसी तरह कम नहीं है । यह मैं बड़े अधिकारियों की बात कह रहा हूं, जिनसे कि बराबर निरन्तर मेरा सम्बन्ध रहा है, और नीचे वाले भी मैं आशा करता हूं कि पहले से अधिक अपने उत्तरदायित्व को समझते हैं और समझते जायेंगे । किसी स्वतंत्र देश में सरकारी कर्मचारियों और जनता के प्रतिनिधियों के बीच में कोई अविश्वास नहीं होना चाहिये, क्योंकि काम दोनों को करना है और दोनों का सहयोग देश की उन्नति के लिये परमावश्यक है । यदि मैंने कुछ किया हो, तो मैं आप से कह सकता हूं, चाहे यह बात एक बड़ी अनोखी सी लगे मैं राजनीति को बहुत बड़ी प्रधानता जीवन में नहीं देता । मैं समझता हूं कि मानवता सब से बड़ी चीज है । मैं लोकतंत्र के लिये समझता हूं कि वह तो जीवन के लिये एक विशेष प्रकार की शैली है जिसमें कोमलता, जिसमें सहृदयता होनी चाहिये । और इसी के साथ साथ कार्य करने के लिये दृढ़ता भी आवश्यक है । परन्तु यदि वह कोमलता न हो, यदि वह सेंसटिवनेस न हो, यदि वह इमोशनल रेस्पांस की शक्ति न हो तो डेमोक्रेसी एक फीकी सी चीज हो जाती है । वह एक ऐसी चीज हो जाती है जिसके अन्दर चाहे वह कितना ही बड़ा ढोल हो सिर्फ हवा रह जाती है । परन्तु चाहे वह कितनी ही छोटी चीज हो उसके ,अन्दर दिल धड़कता है और दूसरे की धड़कन सुन सकता है और उससे मिला सकता है तो डेमोक्रेसी चलती है । डेमोक्रेसी का मूल आधार सहृदयता और सत्य है । मानवता के गुण हैं और कोई राजनीति के गुण नहीं हैं । मैंने यथा सम्भव उनको जब मुझे जो काम करना पड़ा, समझने और सम्हालने की कोशिश की । मैं समझता हूं कि दुनियां के बहुत से दुख दूर हो जायं अगर आदमियों में सिर्फ एक चीज आ जाय । वह है अंडरस्टैंडिंग । अगर एक दूसरे को समझने और अपनी कमजोरियों को निर्भीक हो कर दूसरों के सामने रखने और उनको दूर करने का जो भी रास्ता कोई बतलावे उसका उपकार मानने का मनुष्य का अभ्यास हो जाय तो काफी अपने को सुधार सकता है और जीवन तो

एक कसौटी में खींचा जाता है। वह तो प्रतिदिन एक शिक्षा पाने का ही साधन है। "to live is to learn" तो कोई किसी तरह से आदमी अपने को भूले वह किसी काम की बात नहीं। उपनिषद में एक जगह कहा गया है कि जानता वह आदमी है जो जानता है कि मैं कुछ नहीं जानता। दुनिया में इतना ज्ञान है, इतना बोध, इतना जीवन असीम क्षेत्र है, उसमें कोई भी कितना क्या जान सकता है और कितना क्या कर सकता है। करोड़ों आदमी भूखे हैं, करोड़ों बेकार हैं, करोड़ों ऐसे हैं जिनके पास बदन ढकने का भी साधन नहीं, हम क्या कहेंगे कि हमने क्या किया? जब तक इस तरह के प्राणी हमारे देश में रहते हैं तब तक कोई राजनीति का स्थान नहीं है, तब तक स्थान है केवल सेवा का। सेवा को, अपनी कमी जानते हुये, हमारे पास कुछ है, खाते भी हैं, पहनते भी हैं, लेकिन इतने और हैं जिनके पास नहीं है, उनको दिलाने की जरूरत है। और उनकी सेवा करें, यह भावना लेकर डेमोक्रेसी चलानी हैं। डेमोक्रेसी "Rule of the majority" है, यह बिलकुल गलत चीज है। रूल आफ मैजारिटी और रूल आफ माइनारिटी यह कुछ नहीं, डेमाक्रेसी है रूल आफ दी राइट और वह राइट जो है वह सिर्फ दिमाग से नहीं, दिल से पैदा होने वाला जो राइट है, उस राइट के माने हो जाते हैं राइटियसनेस। इसको ले कर काम करना है। डेमोक्रेसी को वास्तव में कार्यान्वित करने का एक मार्ग है, उसमें जितना जिससे बन सके करे। मेरा मतलब यह नहीं, मैं बिलकुल इसका दावा नहीं करता, कि मैं ऐसा करता हूं मगर मैं इस तरह से उसको देखने की कोशिश करता हूं।

कितने बेचारे हमारे शिड्यूल्ड कास्ट के भाई हैं। जब तक उनकी यह दशा है, एक भी ऐसा रह गया, जब तक देश में कहीं पर भी कोई खामी रह जाती है और जब तक वह खाई न भरे तब तक वह मैदान नहीं मिलता जिसमें हम आगे दौड़ सकें। उसको दौड़ते ही रहना है, तब तक आगे चलते रहना है। उसके लिये एक जन्म नहीं १०० जन्म भी आदमी के हों तब भी कोई चीज नहीं जिसको इस तरह का पुरस्कार मिले जैसा कि आप ने मुझको दिया। उसके लिये स्वर्ग क्या चीज है। मुझे १०० दफे यह कोई कहे मैं उसे हाथ जोड़ूं कि मुझे स्वर्ग न दो, सेवा से बेहतर वह चीज नहीं है। जब तक सेवा का क्षेत्र है तब तक दूसरा कार्य मनुष्य के लिये हो नहीं सकता। तब तक लोग दुखी हैं और उनके दुखों को दूर करने के लिये कोई अवसर मिल सकें उससे पुनीत धर्म का कोई कार्य हो नहीं सकता। हमने पहले से ही केवल राजनीति को ही नहीं जाना है। हमारे देश की मर्यादा राजनीति को लांघ कर उससे ऊंची उठ गई है। उसमें तो कहीं भी कोई दुखी हो, चाहे अपने ही देश का न हो उसके लिये भी दर्द होता है। उसने कभी किसी दूसरे पर प्रहार नहीं किया, उसने कभी हिंसा नहीं की, उसने केवल अपनी संस्कृति, अपनी सभ्यता और अपने ज्ञान के द्वारा दूसरों का उपकार किया और दूसरों ने भी उसके द्वारा यथासंभव जो कुछ सजग होने का अवसर मिला उसका उपयोग किया, परन्तु दूसरों से लेने का नहीं, देने का ही हमारे देश का प्राचीन जमाने से मार्ग रहा और उसी में हमारी ख्याति रही और मेरी हार्दिक इच्छा है कि हम उस काम को करें, हमारी डेमोक्रेसी सफल हो पल्लवित हो और उसी से हमें सब कुछ मिल सकता है। मैं तो जब यह सुनता हूं कि प्रदेश भर में मेरे जाने से लोगों में कुछ उदासीनता हो रही है, मैं उनके प्रेम के लिये हर तरह से आभारी हूं, मैं उसके लिये कृतज्ञ हूं। परन्तु जहां तक भविष्य में हमारे प्रदेश के शासन का काम है, मैं समझता हूं कि वह इस बात को जानते नहीं कि उसे तो हमारे साथियों ने किया और वे साथी यहां मौजूद हैं—जिन्होंने किया और जो करने वाले थे। जब सम्पूर्णानन्द जी ऐसे विद्वान, योग्य, अनुभवी, शासनकुशल, दृढ़, हर तरह से अनुशासन को बरतने वाले, ज्ञान और बुद्धि दोनों को एक साधारण मनुष्य से बहुत अधिक मात्रा में रखने वाले, एक हमारा नेता मिल चुका है तब फिर शंका किस बात की है? उसके लिये तो कोई स्थान नहीं है। स्नेह का जहां तक सम्बन्ध है प्रेम तो अपना जिसका जिससे भी संभव हो, होता ही है। अपनी स्त्री बदसूर भी हो, खूबसूरत को चाहे आदमी देखे मगर प्रेम अपने ही स्त्री से होता है, कम से कम होना चाहिये और वही शुद्ध प्रेम होता है, परन्तु इससे भूलना नहीं चाहिये कि स्त्री की बुद्धि कितनी है जो बदसूरत है और जिसका रूप अच्छा है उसकी कैसी है, इसका जहां तक तुलन है

[श्री गोविन्द वल्लभ पन्त]

वह तो ठीक ही होना चाहिये। इसलिये मैं समझता हूं कि इस बात में कोई शंका का अवसर नहीं है। मैं आपसे और अधिक कहना नहीं चाहता। मैंने जो कुछ भी यहां किया और बाहर किया, उसमें बहुत गलतियां कीं। मैं इस बात को नहीं समझता कि कोई आदमी यह दावा कर सकता है कि वह ग़लती नहीं करता अगर करता है तो वह जरूर गलती करता जायगा और जब तक कोई मानता है कि मनुष्य से गल्ती होती है और हमेशा सुधारने की गुंजाइश है उसके लिये हमेशा आगे उन्नति करने का मार्ग रहता है। नहीं तो यह समझ कर बैठ जाय कि उससे गल्ती नहीं होती है, जो कुछ उसने किया वह ठीक ही किया, तो फिर उसके लिये खिड़की बन्द हो जाती है और उसके आगे बढ़ने का दरवाजा वह खुद ही बन्द कर देता है। तो वह चीज यहां पर नहीं है। मुझसे ग़लती हुई है मगर उस पर आपने, सबने सहृदयता से और उदारता से ध्यान नहीं दिया। मैं तो यह चाहता हूं कि आपका स्नेह बना रहे, क्योंकि वह राजनीति की परिधि के अन्दर बन्द नहीं होता। हम राजनीति में अपनी मानवता को कुचलना नहीं चाहते हैं। हम राजनीति को मानवता का ऊंचा से ऊंचा आदर्श प्राप्त करने के लिये एक साधन बनाना चाहते हैं, परन्तु उसको अगर हम एक इस्पात के शिकंजे में बन्द कर दें खुद अपनी मानवता को खो दें तो फिर राजनीति निरर्थक ही नहीं, बल्कि हमको भ्रष्ट करने वाली हो सकती है। इसलिये उस राजनीति को एक साधन मानवता को प्राप्त करने के लिये बनाना है और अपने देश में और संसार में उस मानवता को प्राप्त करने के लिये साधन बना कर हम जीवन का स्तर अपने यहां और संसार में ऊंचा कर सकते हैं। मुझे यहां से जाने में उदासी होती है और वह उदासी होना स्वाभाविक है और वह बड़े अच्छे काम के लिये भी उदासी होती है। जो जीवन में सदैव साथी रहे हैं और जिनके साथ जो कुछ भी अच्छा काम करने का श्रेय मिला है उन साथियों से अलग होना दुखद होना अनिवार्य है। मुझे इस बीच में कई दफा शकुन्तला नाटक जिन्होंने पढ़ा है उनको मालूम होगा कि उसकी बात याद आ जाती है। जिस समय शकुन्तला कण्व ऋषि के आश्रम से जा रही थी और जो बातें उसने उस समय कही थीं तुम इस तरह से रहना वह सब बातें याद अक्सर आती रहीं। परन्तु मैं समझता हूं कि मैं फिर बार-बार आता रहूंगा। जो यहां पर पेड़ लगा है वह देखूंगा। जो नहर, नलकूप बन रहे हैं और जो दूसरे काम हो रहे हैं उन सबको देख कर मुझे अपने दिल को तसल्ली देने का मौक़ा मिलेगा। मगर इन सबसे बढ़ कर यह कि जो सब से बड़ी धरोहर आपका प्रेम, आपका विश्वास और आपकी दिलीउदारता है उसको ऐसा मूल्य देता हूं जिसका कोई नाप नहीं है, प्रमाण नहीं है, वह मुझे मिलती रही है, वह आपकी सबसे बड़ी धरोहर और थाती होगी और उस धरोहर के योग्य मैं अपने को बना सकूं यह मेरा भरोसा है। यह देश इस तरह से बढ़ता जाय कि हम थोड़े से अर्से के बाद ही अपने वहां सब को सुख समृद्धि प्राप्त करा सके और संसार में जो देश किसी जमाने में सर्वत्र ज्योति दिखाता था वह एक उज्ज्वल प्रतीक होकर औरों के अन्धकार को दूर कर सके और सर्वत्र ऐक्य, पारस्परिक विश्वास, भलमनसाहत और भाई चारा बढ़ा सकें, यह मेरा विश्वास है। यह पूरा होगा, हम सब का कल्याण होगा यह मेरी आशा है।

(तुमुल करतलध्वनि)

श्री अध्यक्ष--इस आदरणीय सदन ने जिन भावनाओं के साथ अपने नेता को, अपने प्रिय नेता को, अपने पूज्य नेता को, विदाई दी है यह अवसर उसके लिये अभूतपूर्व है। मैं समझता हूं कि हमारे देश की विधान सभा के इतिहास में यह पहला ही अवसर है कि चुनाव के बाद सदन का पूरा समय भी न हो और उसका नेता दूसरे स्थान को चला जाय और सदन को दुखी छोड़ जाय। विदायी तो वैसे हर एक व्यक्ति के लिये व्यक्तिगत जीवन से भी बड़ी दुखद हुआ करती है लेकिन जब किसी महान जनसमुदाय का हृदय सम्राट कोई व्यक्ति हो और उस प्रतिनिध सभा का, जो जनता का प्रतिनिधित्व करती हो, उसको अपने हृदय सम्राट के विछोह की कितनी वेदना हो सकती है, इसकी कल्पना मैं समझता हूं थोड़े से अवसर में हमको यहां दिखायी दी। अनेक प्रकार की भावनायें लोगों ने व्यक्त कीं और अपने नेता के जो गुण थे

उनका गुणगान किया और उसके सिलसिले में वे स्मृतियां भी जाग्रत हो गयीं जिनमें हमारा इस सदन में उनसे नेता सदन के रूप में सम्पर्क रहा तथा उसके पहले भी इस सदन के निर्माण के पूर्व उन्होंने अपने देश की सेवा की, देश के लिये बलिदान और कुरबानी करके देश को स्वतंत्र बनाने के कार्य किये, उनका भी जिक्र इस समय पर किया गया । अब मैं किन शब्दों में अपनी भावनाओं को आपकी भावनाओं में मिला कर अपने विचारों को व्यक्त करूं, उसके लिये कोई शब्द मुझे नहीं आ रहे हैं । हृदय जब भरा होता है, बोझिल हो जाता है और उसके विचार करने की शक्ति कुंठित हो जाती है, वही अवस्था आज मेरी है ।

मेरा संबंध पंत जी से उस समय से है जिस समय से कि उनका सम्बन्ध इस सदन के कार्य से रहा है । करीब ३० वर्ष के हो गये जब स्वराज्य पार्टी का निर्माण हुआ था तो मैं भी आल इंडिया कांग्रेस कमेटी के एक सदस्य की हैसियत से उसमें शामिल हुआ, उसी समय से मेरा और उनका परिचय और सम्बन्ध रहा है । उस समय से मैं उनकी ओर सदैव क्रमशः आकर्षित होता ही गया और उनका अनुयायी बनता गया। मैंने उनमें एक विशेषता पायी और उसी विशेषता के कारण मैं उनका अनुयायी पूर्णरूप से होने को तैयार हुआ, वह थी उनकी सत्य के प्रति निष्ठा और प्रतिष्ठा तथा असत्य से भीरुता, पाप से डरना और सत्य के ऊपर हर निष्ठा करना। हर प्रकार के कार्य करने में यही उनकी कसौटी थी । जब भी कोई ऐसी समस्या उनके सामने आ जाती थी कि किसी कार्य को करना या न करना तो वह पहले ही सोच लेते थे कि वह सचाई का मार्ग है या नहीं, कहीं असत्य की मिलावट तो उसमें नहीं है। उनकी यही एक कसौटी थी। राजनैतिक क्षेत्र में जब हम स्वराज्य की लड़ाई लड़ रहे थे उस समय तो यह गुण उनमें दिखायी ही देता था लेकिन शासन काल में भी उनके इस सिद्धांत की सच्चाई अच्छी तरह से मालूम हो गयी। शासन करने में आज कल लोग समझते हैं कि आज कल की, दुनिया में कभी-कभी असत्य के साथ कम्प्रोमाइज भी करना पड़ता है लेकिन मैंने पंत जी की कार्यशैली में यह नहीं देखा। जरा भी असत्य कहीं आ गया और अगर उस पर बहस और विचार करने का मौका आया तो उन्होंने स्पष्ट रूप से कह दिया कि इस रास्ते में थोड़ी सी असत्य की मिलावट प्रतीत होती है, इस मार्ग को बचा कर कार्य करना उचित होगा । यह चीज थी जिससे मैं पूर्ण रीति से उनका अनुयायी बन गया।

दूसरी बात मैंने उनके स्वभाव में यह देखी कि उन्होंने हमेशा राजनीति को दूसरे दर्जे का समझा और मानवता को हमेशा ऊंचा समझा और इस लिये दूसरों के दुख के लिये सदैव सजग रहे। वे विरोधी के दुख पर भी विचार करते रहे हैं कि किस कार्य से उनके ऊपर चोट पहुंचेगी और कितना उसका नुक्सान होगा। फिर उसका लिहाज भी रखते थे केवल अपनी पार्टी का ही और अपने लोगों का ही विचार उनके हृदय में नहीं रहता था । क्षमाशीलता इतने ऊंचे दर्जे की मैंने देखी है कि बहुतों ने बड़े-बड़े कसूर कर दिये राजनैतिक क्षेत्र में भी और बाहर के प्रसंगों में भी या उनके प्रति कुशब्द का प्रयोग करने में, लेकिन जिस गम्भीरता के साथ उन सब बातों को वे पचा जाते हैं, यह एक आदर्श उदाहरण है प्रजातंत्र को कायम करने वालों के लिये जिसे प्रजातंत्र के हितैषियों के सामने उन्होंने रखा, यह क्षमाशीलता और सौजन्य एक आदर्श उदाहरण हम लोगों के सामने रखा। यही कारण है कि वे सभी प्रकार के लोगों में लोकप्रिय हैं क्योंकि वे सबके दुख दर्द को देखते हैं और मानवता को राजनीति से ऊंचा रख कर ही कार्य करने वाली उनकी शैली रही है। यही कारण है कि जिसका परिणाम यह हुआ कि हर कार्य में उनकी इतनी कुशलता रही है और उनके दिमाग में सब बातें स्पष्ट होती रही हैं और हर कठिनाई का हल तत्काल आपके सामने मौजूद रहा। मैंने उनके कैबिनेट में भी कार्य किया है और मुझे कई प्रसंगों में कठिनाइयां पड़ीं और जब भी मुझे कोई हल नहीं सूझता था तो मैंने तो दो चार रोज सोचते रहने के बाद इनसे हल पूछा और तो हरदम यह पाया कि मैं जिस प्रश्न को दो तीन दिन में हल नहीं कर सका उन्होंने ५ मिनट के अन्दर सब बातें समझ लीं और बतला दिया कि उसका यह हल है और उसके अनुसार

[श्री अध्यक्ष]

चलने पर हमको कामयाबी हुई। तो इस कुशलता का मुख्य कारण यही है कि वे सत्य पर आरूढ़ रहते हैं और सत्य की खोज में हमेशा बने रहते हैं और उस खोज में आप का किसी सम्बन्ध में आशक्ति का भाव नहीं रहता है। कोई बात हो, कोई विषय हो, कोई प्रसंग हो उस पर अनाशक्ति से नियन्त्रण करते हैं और अहंभाव को हमेशा मिटा कर उस विषय पर विचार करते हैं। मेरा जीवन भर का उनके सम्बन्ध में यही अनुभव रहा है कि यही उनके गुण है कि जिन गुणों की वजह से वे आज इतने कामयाब हुये हैं शासक की हैसियत से और इतने लोगों को सुखी करने में और समृद्धि करने में। आप जानते हैं कि जब सन् ४७ में हम आये तो ऐसा मालूम होता था कि अंग्रेजों का यह कहना शायद सही साबित होगा कि उनके चले जाने के बाद हमारे हिन्दुस्तानी भाई एक दूसरे को गर्दन काटेंगे तथा यह कहीं सिद्ध न हो कि हम स्वराज्य पाने के योग्य नहीं थे। लेकिन जब कि और जगह साम्प्रदायिकता की आग जल रही थी तो केवल यू० पी० का ही एक ऐसा मंत्रिमंडल पंडित गोविन्द वल्लभ पन्त जी के नेतृत्व में था जिसने अपने प्रदेश तथा तत्द्वारा सारे देश को साम्प्रदायिकता की आग से बचाया। उन्होंने अंग्रेजों को दिखा दिया कि हम हिन्दुस्तानी अच्छी तरह से इतनी कठिनाइयां आने के बाद भी अपने शासन को चला सकते हैं। उस समय की परिस्थिति पर काबू पाने में नेतृत्व हमारे पूज्य पंडित गोविन्द बल्लभ पंत जी ने इस सूबे में किया जिसके कारण इस सूबे का नाम सारे देश में ऊंचा हुआ है।

जहां तक कि इस आदरणीय सदन का इतिहास है, वह इसके बाल्यकाल से ले कर आज तक का पन्त जी का ही इतिहास है। उन्होंने यहां पर सदन को जो मर्यादा है, जो परम्परायें हैं, जो इसकी प्रतिष्ठा है उसको ऊंचा करने के लिये हमेशा प्रयत्न किया है और इस सम्बन्ध में मैं अपने लिये भी कह सकता हूं कि इस कुर्सी की स्वतंत्रता कायम रखने में, मेरा अनुभव हमेशा रहा है कि उन्होंने इस कुर्सी की निष्पक्षता बनाये रखने में कभी भी कोई ऐसा संकेत किसी किस्म का इस विषय में नहीं किया कि यह फलां बात इस प्रकार होनी चाहिये या फलां बात नहीं होनी चाहिये बल्कि हमेशा यही कहा कि जो उचित समझिये वही कीजिये। यद्यपि हम लोग किसी न किसी तरह से किसी न किसी पार्टी से सम्बन्धित रहते हैं लेकिन इस सदन की प्रतिष्ठा को कायम रखने का उन्होंने पार्टी से ऊपर उठकर सदैव प्रयत्न किया और इस तरह से इस सदन की प्रतिष्ठा, मर्यादा और इसकी स्वस्थ परम्पराओं को कायम करने के लिये उन्होंने यहां प्रजातंत्र के तरीकों को और उसके सिद्धांतों पर नये तरीकों को यहां स्थापित किया। इस तरह से वह इस प्रदेश के और कार्यों के निर्माता होने के अतिरिक्त सदन में प्रजातंत्र के सिद्धांतों के अनुसार नई परम्पराओं के भी निर्माता हैं और इसलिये मुझे इस बात का पूर्ण विश्वास है कि हमने उनके नेतृत्व में इस दिशा में भी उन्नति की है। इस प्रदेश से बाहर जाने पर मुझसे बाहर के लोग पूछते हैं कि तुम्हारे यहां तो सदन क्या है बड़ी भारी पार्लियामेंट है, ४३१ सदस्य हैं, हमारे यहां तो कहीं ६० कहीं ८० सदस्य हैं और उसी में बड़ी परेशानी है अनेक बातें वहां होती हैं और तरह-तरह के झगड़े वहां के लोग मुझसे बयान करते हैं और वे आश्चर्य प्रगट करते हैं कि इतने बड़े सदन में कैसे व्यवस्था से काम चलता है। परन्तु मैं यह कह सकता हूं कि इस सब का श्रेय हमारे सदन के योग्य नेता को ही है कि उन्होंने यहां ऐसी स्वस्थ परम्परायें कायम की हैं वर्ना मेरे जैसा कमजोर आदमी किस तरह सदन में नियंत्रण कायम रख सकता था और माननीय सदस्यों में किस तरह से पारस्परिक प्रेमभाव और सद्व्यवहार कायम करा सकता था। अगर हमारे सदन का नेता उस आदर्श पर न चलता होता कि विरोध में कैसा भी भाषण हो जाय कैसा भी कटुभाषण हो जाय लेकिन उसी प्रकार जिस तरह से शंकर ने स्वयं गरल पी कर दुनिया को स्वस्थ कर दिया, उसी तरह से वह कड़वी बात को गरल की तरह पी कर सदन में स्वस्थ वातावरण लाने का प्रयत्न करते थे और यहां शांति कायम रखते थे। कभी थोड़ी बहुत गर्मी भी आ गई फिर भी थोड़ी देर में सब प्रेम से मिलते हैं यह परम्परा वह हमारे लिये छोड़ रहे हैं, यह कोई राजनीति नहीं है यह तो मानवता की बात है। जो उच्च आदर्श वह हमारे सामने रख

कर जा रहे हैं उनका यह सदन सदैव परिपालन करता रहेगा और वह सदा उनका इसके लिये आभारी और ऋणी रहेगा और मैं सदन की ओर से उनको हार्दिक धन्यवाद देता हूं। वैसे तो बिछुड़ने में दुख होता है लेकिन इस अवसर पर मैं एक दूसरे दृष्टिकोण से थोड़ा सा हर्ष भी व्यक्त करना चाहता हूं। यह सदन अपने को सौभाग्यशील समझता है कि इसके नेता को इस बात का निमन्त्रण मिला कि वह इस प्रदेश के सीमित कार्य-क्षेत्र को छोड़ कर केन्द्र को समस्याओं को जा कर सुलझायें। इससे बड़ा आदर और किसी को नहीं मिला है और इतने कठिन समय में जब उनको केन्द्र से निमन्त्रण मिलता है तो मैं समझता हूं कि उससे इस सदन की प्रतिष्ठा बढ़ती है और उसे बड़ा भारी गौरव प्राप्त होता है (तालियों की ध्वनि) इसलिये मैं, सदन की और अपनी ओर से भी दुख के साथ और साथ ही हर्ष के साथ दोनों भावनाओं को लेकर अपने सदन के माननीय नेता को विदाई देता हूं और अपनी शुभ कामनायें अर्पित करता हूं और मैं उनसे यह आशा रखता हूं कि वह केन्द्र में रह कर भी हमारे प्रान्त को आशीर्वाद देते रहेंगे। जो हमारे प्रान्त की समस्या हों, यह नहीं कि इस प्रान्त के साथ हम उन से कोई पक्षपात चाहते हैं बल्कि जो हमारा अधिकार हो, उनके साथ जो न्याययुक्त निर्णय हो, ६ करोड़ ३२ लाख जनता का जो हक हो वह हमें मिलता रहे, इतनी आशा कर के हम अपने पूज्य नेता को विदाई देते हैं।

(तालियों की ध्वनि)

सदन की कार्यवाही स्थगित करने का प्रस्ताव

श्री अध्यक्ष--अब आगे का आज का कार्यक्रम जारी होगा.....

श्री नेकराम शर्मा (जिला अलीगढ़)--अध्यक्ष महोदय, मैं प्रस्ताव करता हूं कि इस समय सदन की कार्यवाही स्थगित कर दी जाय क्योंकि इस समय सभी का दिल भरा हुआ है और सब का हृदय बोझिल है जिस से आगे की कार्यवाही होना भी कठिन है।

राजा वीरेन्द्र शाह--(जिला जालौन) अध्यक्ष महोदय, हम भी चाहते हैं कि इस समय सदन की कार्यवाही स्थगित की जाय।

श्री अध्यक्ष--किसी को इसमें आपत्ति तो नहीं है?

(कोई आपत्ति नहीं की गयी)

श्री अध्यक्ष--अब हम उठते हैं और कल ११ बजे फिर बैठेंगे।)

(इसके बाद सदन २ बज कर २५ मिनट पर अगले दिन के ११ बजे तक के लिये स्थगित हो गया।)

मिट्ठन लाल,
सचिव, विधान मंडल,
उत्तर प्रदेश।

लखनऊ;
२७ दिसम्बर, १९५४।

पी० एस० यू० पी० ए० पी० २५९ एल० ए०--१९५५--८००।